आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

वातायन

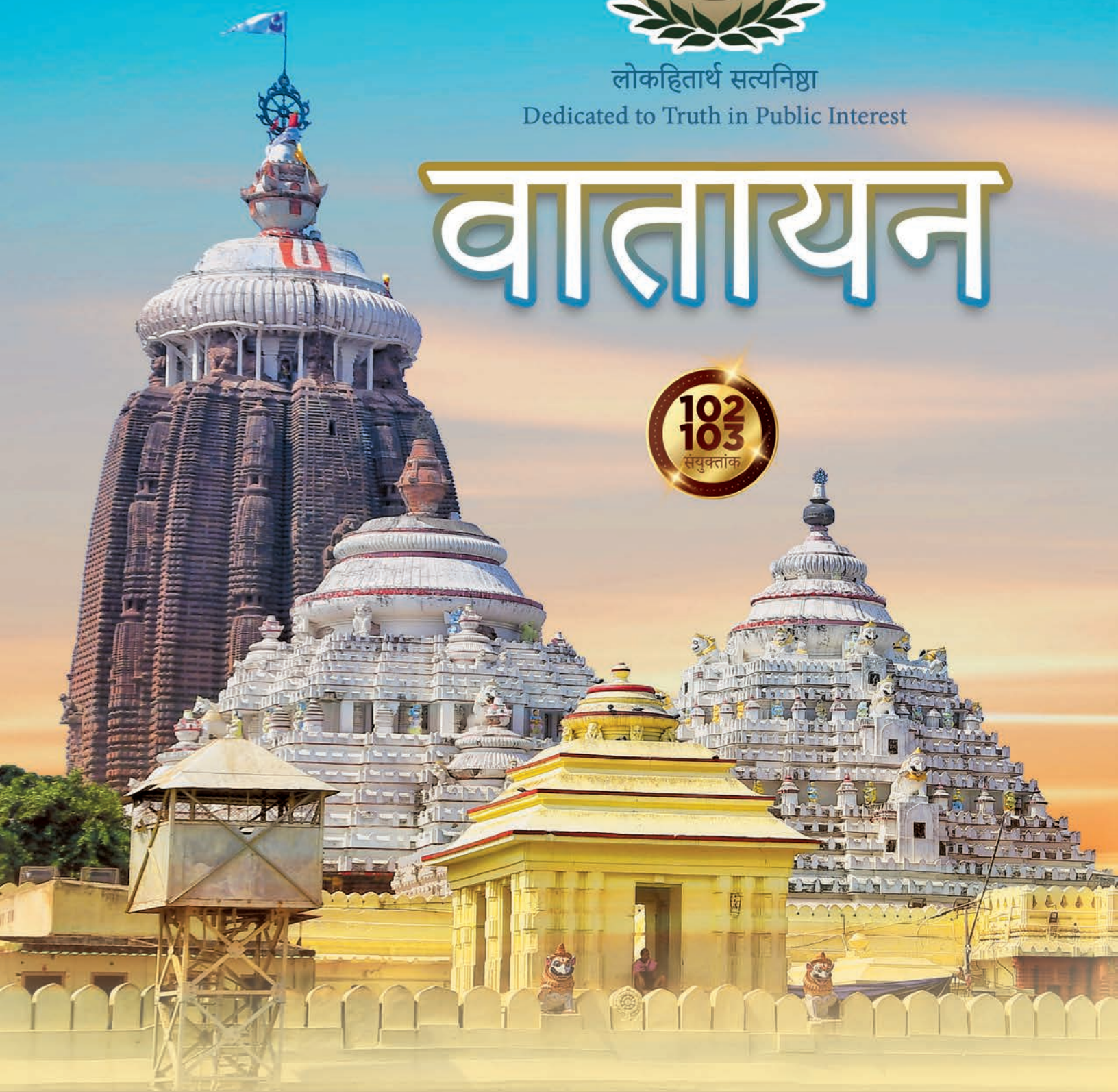

102
103
संयुक्तांक

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर

वातायन के 101 वां अंक का विमोचन

दिनांक 28 जनवरी, 2022 को आयोजित कार्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में महालेखाकार महोदय द्वारा वातायन के 101 वें अंक का विमोचन।

हिन्दी कार्यशाला

वातायन

सत्यमेव जयते

वर्ष 2022-23

(अक्टूबर, 2021 से सितंबर, 2022)

संयुक्तांक- 102-103 **अवधि-छमाही**

राजभाषा की सेवा में

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

ओड़िशा, भुवनेश्वर -751001

मुख पृष्ठः श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी

वातायन पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री अनंत किशोर बेहेरा

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर

संरक्षक

श्री किशोर रेड्डी पोलु

उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशन एवं मार्गदर्शन समिति

श्री श्रीराज अशोक

वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखा एवं वीएलसी)

सुश्री एस. अरुणा

उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री पी.अशोकन

उप महालेखाकार (निधि)

संपादक

श्री मंजेश परासर

हिन्दी अधिकारी

सहयोग

श्री यशवंत वर्मा, वरिष्ठ अनुवादक

कुमारी बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएं हैं कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वातायन

मुख्य संरक्षक की कलम से

हिंदी पत्रिका "वातायन" के संयुक्तांक (102 एवं 103) का प्रकाशन इस कार्यालय के लिए अत्यंत ही गौरव का विषय है। यह इस बात को दर्शाता है कि कार्यालय के कर्मी हिंदी भाषा को लेकर कितने उत्साहित एवं जागरूक हैं। पत्रिका की यह यात्रा राजभाषा के प्रति कार्यालय के कर्मियों की गंभीरता को दर्शाता है। हिंदी न सिर्फ देश की भाषा है बल्कि यह देश का गौरव है जिसके विकास के बिना देश के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। इस भाषा के माध्यम से सिर्फ संवाद संप्रेषण ही नहीं अपितु भावपूर्ण संवाद किया जाता है जिसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है।

राज-काज या शासन की भाषा भी वही होनी चाहिए जिसे सरल एवं सहज तरीके से सामान्य जन तक पहुंचाया जा सके। वर्तमान में यह सामर्थ्य केवल हिंदी में ही है। सभी प्रकार के झिझक को दूर करते हुए कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना हमारा मौलिक दायित्व भी है। किसी भी देश की अपनी भाषा वहां के लोगों के सोचने-समझने की शक्ति को न सिर्फ विकसित करती है बल्कि जीवन के सर्वांगीण विकास में सहायक होती है। इसी क्रम में वातायन पत्रिका कार्यालय के कर्मियों में हिंदी के प्रति झिझक को दूर करने में अहम भूमिका निभा रही है।

वातायन के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

ए. के. बेहेरा

अनंत किशोर बेहेरा

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

संरक्षक की कलम से

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "वातायन" का सतत प्रकाशन कर्मियों के हिंदी के प्रति रुचि एवं भावना को व्यक्त करता है जो यह दर्शाता है कि हिंदी कैसे हम भारतवासी के भावनाओं की अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम है। हिंदी हमारे राष्ट्र की पहचान है जिसके विकास के बिना देश के समग्र विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। बहुत विचार-विमर्श के बाद हमारे पूर्वजों ने हिंदी को राजभाषा का उत्तरदायित्व सौंपा था, जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है। वैश्विक स्तर पर भी हिंदी ने भारत के सम्मान को बढ़ाने का काम किया है। हमारा भी यह दायित्व है कि हिंदी पूर्ण रूप से देश की अभिव्यक्ति का माध्यम बनें।

"वातायन" के 102वें एवं 103वें संयुक्तांक का प्रकाशन कार्यालय के लिए गौरव की बात है। पत्रिका प्रकाशन में कर्मियों की सहभागिता गौरवान्वित करने वाला है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि कर्मचारीगण कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग करेंगे एवं अपने संवैधानिक एवं नैतिक दायित्व का सकुशल निर्वहन करेंगे।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को साधुवाद देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इसी प्रकार पत्रिका का प्रकाशन सतत एवं नियमित बना रहें।

किशोर रेड्डी पोलू
उप महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक की कलम से

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "वातायन" के नवीनतम अंक का प्रकाशन अत्यंत ही हर्षित करने वाली है। यह अंक संयुक्तांक (102 एवं 103) के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है जो "वातायन" पत्रिका के लंबे सफर को प्रतिबिंबित करता है तथा कार्यालय के कर्मियों में हिंदी के प्रति बढ़ते सम्मान एवं रूचि को दर्शाता है। पत्रिका प्रकाशन हेतु प्राप्त रचनाओं से यह प्रतीत होता है कि कार्यालय के कर्मियों में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जो हिंदी भाषा की प्रगति की दिशा में एक सकारात्मक पहल के रूप में देखा जा सकता है।

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि अंग्रेजी का प्रचलन व्यवसायिक भाषा के रूप में वैश्विक स्तर पर है जिसे औपनिवेशिक काल में हमारे देश में भी थोपा गया तथा हमारी भाषा ही नहीं अपितु हमारी सभ्यता-संस्कृति को भी क्षत-विक्षत कर दिया गया। जिसके विकास के अभाव में हम आज भी विकासशील देश के रूप में जाने जाते हैं जबकि कई देश ऐसे हैं जो हमारे बाद या हमारे साथ आजाद हुए किंतु हमसे कहीं ज्यादा विकसित हैं। आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, एक सच्चे देशवासी होने के नाते हमें यह दृढ़निश्चय करना होगा कि हम अपने राष्ट्र की भाषा को कार्यालयीन कार्य के साथ-साथ सभी जगह गर्व के साथ प्रयोग में लाएं जो न केवल हमारा संवैधानिक अपितु नैतिक दायित्व भी है।

पत्रिका प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ तथा पाठकगण से अपेक्षा करता हूँ कि वे अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव दें ताकि पत्रिका उतरोत्तर प्रगति कर सकें।

डॉ. मंजेश परासर
हिंदी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	प्रधान महालेखाकार का संदेश		
2	उपमहालेखाकार (प्रशासन) का संदेश		
3	संपादकीय		
1.	फिर भी मैं परेशान हूं	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक	1
2.	हिन्दू-मुस्लिम	श्री रवि जायसवाल, लेखाकार	4
3.	हार-जीत मन से होती है	सुश्री बबिता मणि, कनि. अनुवादक	5
4.	मनोरंजन के साधन में समय अनुसार परिवर्तन	सुश्री सोनी कुमारी साव, लेखाकार	8
5.	किस्मत	श्री संजीव कुमार दुबे, लेखाकार	11
6.	कहानी किसे कहते है	श्री रामबालक पासवान, सहायक निदेशक, हि.शि.यो	13
7.	मेहनत के फल का महत्व	श्री रामबालक पासवान, सहायक निदेशक, हि.शि.यो	14
8.	अकेला	श्री दिनेश नारायण मुखी, पर्यवेक्षक	16
9.	चंचल मन	श्री ओम प्रकाश , सहायक लेखा अधिकारी	18
10.	भ्रष्टाचार	श्री प्रदीप कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	19
11.	जो भी है चलता जाता है	श्रीमती वीणापाणि महांति, वरिष्ठ लेखाकार	20
12.	बुराई या अज्ञानता	श्री विरेन्द्र यादव, वरिष्ठ लेखाकार	21
13.	अमृत	श्री अभिषेक कुमार , सहायक लेखा अधिकारी	23
14.	आदत	श्री यशवंत वर्मा, वरि. अनुवादक	25
15.	द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत	श्री मंजेश परासर, हिन्दी अधिकारी	26
16.	चिंतन	श्री बिजय कुमार नाएक, वरिष्ठ लेखाकार	30
17	आज दुनिया को मानवता की जरूरत	श्री मुकेश कुमार, लेखाकार	31

फिर भी मैं परेशान हूँ

श्रीमती शान्तिलता सेठी
पर्यवेक्षक

दिसम्बर का महीना था। ज्यादा ठंड की वजह से रात 9 बजे गांव का रास्ता सुनसान लग रहा था। (ठंड की ताप मात्रा लगभग 10 डिग्री पहुँच गया था। हर दिन कोई बुढ़ा आदमी नहीं तो बुढ़ी औरत मरती थी।

मेरी दादी माँ लगभग 95 वर्ष की हो गई थी। दादा जी के जाने के बाद दादी माँ की तबियत खराब होने लगी। अकेले चल फिर नहीं सकती थी। फिर भी वह मेरी सबसे बड़ी ताकत थी। वह मेरे लिए माँ सरस्वती जैसी थी। ठंड कि वजह से मेरी दादी माँ हर रोज सोने से पहले लकड़ी जलाकर आग से सेकती थीं। एक दिन मेरी माँ और मेरी चाची दोनों बोल रहे थे 'इस साल बूढ़ी चली जाएगी"। यह बात सुनकर मेरे पापा बोले जितने दिन की उनकी आयु है, उनको कोई नहीं मार सकता। मेरी माँ मेरे पिताजी को बोली- सुनिये! श्याम भैया की पत्नी ने चार ब्राह्मण को बुला कर गोदान और सोना दान कराया जिसके बाद उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया। वो बीमारी से तड़प रही थीं। ब्राह्मण को दान देने से बात 'ख़त्म नहीं हुआ था, मेरे पिताजी जोर से चिल्लाने लगे और बोले, मेरी माँ जितने दिन तक रहेगी, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। कोई ऐसी-वैसी हरकत नहीं करेगा। मेरे पिताजी मेरी दादी माँ को बेहद प्यार करते थे लेकिन उनको काम के सिलसिले से बाहर जाना पड़ता था इसलिए ज्यादा समय घर पर नहीं रहते थे। मेरी दादी माँ को पान बेहद पसंद था। मैंने अपने हाथ से पान तैयार करके दादी माँ को खिलाया और बोला, 'दादी माँ आज सोने के वक्त एक अच्छी वाली कहानी सुनाओगी? दादी माँ बोली, ठीक है। दादी माँ और मैं एक बेड पर सोते थे। दादी माँ का आंचल पकड़ कर सोना मुझे अच्छा लगता था। दादी माँ को मैंने एक कम्बल ओढ़ाकर सुला दिया और उनके पास बैठकर पांव दबा रही थी। कहानी सुनाने के लिए मैंने दादी माँ को बोला। दादी माँ बोली, सच्ची बात पर आधारित यह कहानी है। मैं बोली. ..कहिए। दादी माँ बोली, कहानी सुनते सुनते तुम सो जाओगी। मुझे कैसे मालूम होगा तुम कहानी सुन रही हो या नहीं? दादी माँ मुझे प्यार से सीता बुलाती थीं। दादी माँ के मुंह से सीता मुझे बहुत अच्छा लगता था। दादी माँ कहानी सुनाते-सुनाते बीच में रुक जाती थीं और जब मैं कुछ नहीं बोलती थी, दादी माँ मुझे बोलती थीं, सीता कहानी सुनते-सुनते हूँ बोलो। ऐसे करने से मुझे पता चलेगा की तुम सुन रही हो। मैं बोली, 'तुम्हारी कहानी मुझे बेहद अच्छी लगती है। तुम सुनाओ तो सही।' दादी माँ बोली - हमारे गांव मे एक जमींदार थे। उनका नाम था विजय सामन्त राय था। उनके तीन बेटे थे। बड़े बेटे का नाम था - युधिष्टिर, मंझले का नाम था- भीम और छोटे का नाम था - अर्जुन। विजय सामन्त राय की पत्नी का नाम विमला सामन्त राय था। विमला सामन्त राय देवी माँ लक्ष्मी की तरह थीं। विमला सामन्त

राय की शादी होने के बाद – विजय सामन्त राय की धन-संपति बढ़ने लगा। तीनों बेटों ने अच्छी पढ़ाई के साथ जमींन की फॉरमिंग का नया टेक्नोलॉजी सीख करके बहुत अमीर बन गये। तीनों बेटों की शादी भी हो गई। तीनों बेटों की शादी के बाद घर में भाइयों के बीच अनबन होने लगा।

सुन रही हो? मैं बोली दादी माँ, उसके बाद क्या हुआ? धन सम्पत्ति की कोई कमी नहीं थी लेकिन मन में खोट आ गया। इसलिए विजय सामन्त राय तीनो बेटों को अलग कर दिया। उनके बच्चे अच्छी पढ़ाई कर के अच्छी पदवी पर अब हैं लेकिन उनके बच्चे संस्कार नहीं सिख पाये। आधुनिकता नाम से उनके बच्चे बिगड़ने लगे। मंदिर की तरह घर था। सुबह 6 बजे सब स्नान करके पूजा मे बैठते थे। घंटी और शंख की आवाज चारों-ओर गूंजता था। सुबह बच्चे से लेकर बूढ़े तक सूर्य देवता का पूजा करते थे। बड़े को सम्मान देना और छोटे का आदर करना सबका धर्म था। परिवार के सब सदस्य प्यार और ममता की डोर से बंधे हुए थे। आज कल बहू, बेटा सब आठ बजे तक सोते रहते है। सुबह का सूर्य दर्शन उनके नसीब में नहीं था। इसलिए सब को ठंड की बीमारी हो रही है। बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। 9.30 बजे तक सोते रहते थे। पहले जैसे अपनापन नहीं रहा। मैं बोली दादी माँ, हाँ, यह बात तो सही है। दादी माँ बोली हाँ इस बात की मुझे भी फिकर है मैं बोली, दादी जल्दी कहो...। दादी बोलीं सुनो, माता- पिता अपने बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करते हैं। माँ एक संतान के लिए कितना पूजा-पाठ करती है ताकि उसके बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो। उसके साथ एक आशा रखती है की मेरा बेटा मेरे बुढ़ापे में मेरा सहारा बनें। माता-पिता अपनी सारी कमाई खर्च करके बेटे को बड़ा आदमी बनाते हैं और बुढ़ापे में अपने बच्चों के ऊपर निर्भर हो जाते हैं। उस समय अपनों के साथ वक्त बिताने को मन बना लेते हैं। तब बच्चे अपने कार्य में व्यस्त रह कर अपने माता-पिता को भूल जाते हैं। अपनी पत्नी और बच्चे के सिवा उनको कुछ नजर नहीं आता है। जिसके कारण से माता-पिता अकेले पड़ जाते हैं। जब माता-पिता में से किसी एक का निधन हो जाता है तब एक को अकेला रहने में मुश्किल होने लगती है। मैं बोली- हाँ, दादी माँ।

दादी माँ बोली–अब बच्चे अपने माता-पिता की लम्बी आयु से खुश नहीं होते हैं। माता-पिता उनके लिए बोझ बन जाते हैं। यदि किसी के मां-बाप बीमार होकर बेड पर एक साल तक पड़े रहे तो उनके बच्चे ब्राह्मण को बुला कर आयु समाप्त करने के लिए अपने माता-पिता के नाम पर दान देते है। सोना, चांदी से लेकर गोदान तक दान में दे देते हैं।

मैं बोली, ठीक से समझाइए मेरी समझ में नहीं आ रहा है। दादी माँ बोली- बूढ़े बीमार माता-पिता को ले जाने के लिए यमराज को बुलाती है। जब अपने बच्चे बीमार पड़ते है, माँ रात भर जागती रहती है। अपने बच्चे की दीर्घायु की कामना करके, पूजा, उपवास करके भगवान जी को बुलाती है। हे प्रभु! मेरी उम्र मेरे बच्चे को दे दो, बदले में मेरी जान ले लो। वही बच्चे बूढ़े माता-पिता के साथ यह सब कैसे करते है? मैं बोली - दादी माँ, यह कहानी हमारे घर की कहानी जैसी लग रही है। कल तो हमारे घर में पूजा हो रहा था। मतलब - माँ और चाची दोनों मिलकर यह सब कर रहे थे। दादी माँ बोली, नहीं वह तो मेरे गाँव की बात है। मैं दादी को बोली तुम तो इस कहानी की देवी लक्ष्मी हो। यमराज तुम को देखकर डरकर चला जाएगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह सब बेकार की बात है। दान देने से कोई नहीं मरता है। दादी बोली कभी-कभार सच भी

हो जाता है। मैं दादी माँ के कम्बल में घुस गई और दादी माँ को जोर से पकड़ के बोली तुम मेरे साथ रहोगी। मेरे पास। मैं जब नौकरी करूंगी तुम्हें अपने साथ ले जाऊँगी।

दादी बोली, अच्छा एक बात याद रखोगी। माता-पिता चलता-फिरता भगवान है। उनका कभी भी अपमान मत करना। अपने माता-पिता के आशीर्वाद के बल पर ही नाम कमाओगी। यह संस्कार मेरी माँ ने मुझे दिया है। मैं बोली हाँ, दादी माँ चलो सो जाते है। मन में डर था, यदि बात सच हो जाएगी तो...। आँखों में नींद आ गई। सुबह दो बजे नींद टूट गई। देखा तो दादी माँ मेरे पास नहीं थी। मैं घबरा गई और दादी माँ, दादी माँ कहकर चिल्लाने लगी लेकिन कोई जबाव नहीं मिला। मेरे पिताजी घर पर नहीं थे। मैं, मेरी माँ और चाची को ढूँढ़ते- ढूँढ़ते पूजा घर के सामने बैठी हुई दादी माँ नजर आई। मैं दादी माँ का हाथ पकड़ कर उठाने लगी। दादी माँ का हाथ ठंडा पड़ चुका था। दादी माँ चल पड़ी। सब लोग जोर-जोर से रोने लगे लेकिन मेरी आंख शक की नज़र से अपनी माँ को देख रही थी।

कोई मेरी दादा माँ की मन की बात को नहीं समझ सका। दादी के साथ थोड़ी बात करने के लिए माँ और पिताजी के पास वक्त नहीं था। दादी माँ के मन पर क्या बीता होगा। मेरी समझ में आ गया। दादी माँ ने तो सब बताया लेकिन मैं समझ नहीं पाई। मेरी आंखों से आँसू रुक नहीं रहे थे। मैं पिताजी के आने के बाद दोनों से बोली, कल फिर मेरे नाम पर दान दीजिए। मुझे भी मरना है। मेरे पिताजी और मेरी माँ मुझे पकड़ के रोने लगे। मेरी माँ बोली – "बेटा मुझे माफ कर दो। तेरी चाची के बहकावे में आ गई थी।" तुम्हारे पिता जी ने मुझे बहुत समझाया था और बोला भी था कि दान देने से कोई नहीं मरता है। जन्म-मृत्यु भगवान जी के हाथ में है। हाँ, मैं अच्छी तरह जानती हूँ यह सच नहीं है। फिर भी मैं परेशान हूँ।

हिंदू-मुस्लिम

श्री रवि कुमार
लेखाकार

धर्म की वास्तविक व्याख्या के विलोपन के कारण देश में आए दिन होने वाली हिंदू-मुसलमान की घटनाओं ने जहां एक ओर देश में डर और हिंसा का माहौल पैदा किया है वहीं दूसरी ओर भविष्य के लिए दोनों धर्मों के मध्य एक अविश्वास की नींव रखने का भी कार्य किया है। भारत में और भी धर्म तथा धर्मावलम्बी हैं किंतु सांस्कृतिक टकराव मुख्यतः इन्हीं दो कौमों में देखने को मिलता है। मुसलमान अपने आप को अरबी संस्कृति से जोड़कर देखता है जो हिंदू संगठनों को मंजूर नही क्योंकि इनका मानना है की ये वही संस्कृति है जिसकी बदौलत उसके पूर्वजों पर घोर अत्याचार हुए थे और उन पर जबरन इसे लादा गया था जबकि हिंदुस्तानी मुसलमान उसी अरबी संस्कृति के लिये न सिर्फ लड़ता है बल्कि जान देने पर तैयार रहता है।

अन्य प्रमुख कारण यह है कि आजादी के बाद जब दो राष्ट्र बने तो बंटवारा हिंदू और मुसलमान का पैमाना बनाकर किया गया जिसके कारण भारत में मुसलमानों को अल्पसंख्यक का दर्जा मिला। बस इसी को वोट बैंक की राजनीति करने वाले ने अनेक मौकों पर भुनाया। हिंदूओं से यह कहा गया इन लोगों ने अलग राष्ट्र लिया और अब यहां पर तुम्हारा हक खा रहे हैं। मुसलमानों से यह कहा तुम्हारे साथ पहले भी भेदभाव किया जाता था आज भी भेदभाव किया जाता है तुम यहां पर सुरक्षित नहीं हो। यह लोग तुम्हें कभी नहीं अपनाएंगे। और इस प्रकार सत्ता के लालची दोनों कौमों के नेताओं ने दोनों समुदायों को एक दूसरे के खिलाफ बरगलाया और अपना स्वार्थ सिद्ध किया। फिर भी हम कह सकते है कि देश में अन्य देशों की तुलना में जितनी एकता है, वह कम नहीं है यद्यपि और अधिक होनी अवश्य चाहिये। दोनों धर्मों की विचारधाराएं, पूजा पद्धति, कल्चर आदि बिल्कुल उलट है। वैश्विक परिदृश्य पर नजर डाले तो दंगे तो एक धर्म में रहते हुए भी होते है। जैसे पाकिस्तान में शिया-सुन्नी लड़ते हैं। और तो और एक परिवार में भी लड़ाई होती है। यह मतभेद तो चलते ही रहते हैं और चलते रहेंगे। फिर भी हिन्दुओं को सर्वधर्म समभाव और वसुधैव कुटुंबकम की प्राचीन भारतीय परंपरा को कायम रखते हुए यह नहीं भूलना चाहिए कि हममें से हर किसी का दोस्त और पड़ोसी कोई न कोई मुसलमान है और मुसीबत के समय हम एक दूसरे की मदद सदियों से करते चले आए हैं अतः भूली बिसरी बातों को दिल और दिमाग से निकाल कर नेताओं की बातों में ना आते हुए एक दूसरे के धर्म का सम्मान करते हुए संपूर्ण विश्व के सामने उच्च श्रेणी की पंथ निरपेक्षता और बंधूत्व की भावना का परिचय देना चाहिए। वहीं दूसरी ओर मुस्लिमो को भी इस्लाम पर आस्था रखते हुए बाबर, गोरी, गजनवी, औरंगजेब आदि की जगह उनसे लड़ने वाले हिंदू राजाओं का सम्मान करना चाहिए ना कि अपने बेटे का नाम तैमूर रखकर बेवजह धार्मिक भावनाओं को भड़काने के प्रयास करने चाहिए। ऐसे तमाम कार्य हैं जो कुरान के आदेशों पर चलते हुए भी किये जा सकते हैं जिससे हिन्दू मुस्लिम भाईचारा बढ़े आखिर मुस्लिम देश होते हुए भी इंडोनेशिया ऐसा कर रहा है वहां रामलीला हर साल होती है और मुस्लिम ही करते हैं उनकी करेंसी पर भगवान गणेश का फोटो सर्वविदित है तो हमारे देश में ऐसा क्यों नहीं हो सकता? क्यों हमारे देश का हिंदू अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह पर तो चला जाता है परंतु मुसलमान पास ही के पुष्कर में जाने से परहेज करता है ?

अंत में, मैं दोनों धर्मों से यही कहना चाहूंगा की अपने धर्म को देश और समाज से ऊपर रखने की प्रवृत्ति को तिलांजलि दें और कभी भी प्रथम प्रहार ना करें क्योंकि प्रतिकार तो जानवर करते हैं।

हार-जीत मन से होती है

सुश्री बबिता मणि
कनिष्ठ अनुवादक

कहा जाता है कि जीवन में हार और जीत तो लगा ही रहता है क्योंकि व्यक्ति के जीवन में हमेशा एक समान परिस्थितियां नहीं रहती हैं। उतार-चढ़ाव व्यक्ति के जीवन का एक अहम हिस्सा है। लेकिन परिस्थितियों के साथ समन्वय स्थापित करके जो व्यक्ति आगे बढ़ता है वही सफल होता है। अगर किसी व्यक्ति के जीवन में विपरीत समय चल रहा हो और वो मन में निराशा का भाव लिए इधर-उधर भटक रहा है तो वो मन से बिल्कुल हारा हुआ होता है तथा अपने हालात को अपनी किस्मत मान कर जीने लगता है और ऐसे व्यक्ति को कभी जीत हासिल नहीं होती है। वहीं दूसरी तरफ जो इंसान अपने अच्छे-बुरे समय के साथ ताल-मेल बैठाकर जीवन जीना जानता हो उसे कोई भी हरा नहीं सकता है क्योंकि ऐसे लोग मन में हमेशा जीतने का जज्बा लिए होते हैं।

ये कहानी भी हार-जीत के दौर से गुजरी एक ऐसी ही लड़की की है जिसका नाम गीता था। उसका जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था। उसके पिता महेश एक किसान थे। गीता की मां एक सीधी-साधी औरत थीं। वो दोनों ही गीता को बहुत प्यार करते थे। मां तो कभी-कभार गीता को डांट भी देती थीं लेकिन महेश कभी भी गीता के साथ गुस्से में बात नहीं करता था। वैसे तो महेश के दो और भी बच्चे थे लेकिन वो गीता से ज्यादा जुड़े हुए रहते थे। गीता के प्रति उनके इस अपार स्नेह की वजह भी थी। महेश के तीनों बच्चों में गीता ही सबसे ज्यादा समझदार थी। महेश के बाकी दोनों बच्चे अत्यंत ही सुस्त और आलसी थे। उनका मन ना पढ़ने-लिखने में लगता और ना ही घर-गृहस्थी के काम में ही लेकिन गीता अपने दोनों भाई-बहनों से बिल्कुल ही अलग थी। वो पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ बाकी सभी काम में भी निपुण थी। इसी कारण से वो महेश की नज़र में सबसे प्यारी थी। महेश का गीता को इतना प्यार करना उसके बाकी दोनों बच्चों को तनिक भी नहीं भाता था और वो हमेशा ही गीता से चिढ़े रहते थे, फिर भी गीता अपने बड़े भाई-बहन से बहुत प्यार करती थी। उसकी नज़र में बड़े भाई-बहन उसके माता-पिता के समान थे। गीता अपने बड़े भाई-बहन की तरक्की के लिए सदैव प्रयास करती रहती थी लेकिन उनको इससे कोई मतलब नहीं होता था। जब महेश घर पर नहीं रहता था तो उसके भाई-बहन उसको बहुत ही परेशान करते थे लेकिन गीता इसकी शिकायत कभी भी अपने पिता से नहीं करती थी।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और गीता के दोनों भाई-बहन की शादी हो गई। कुछ दिन के पश्चात महेश की मृत्यु हो गई। महेश की मृत्यु ने गीता को तोड़कर रख दिया। वो अपने पिता को खोने के गम में इस कदर शोकाकुल हो गई कि उसकी पूरी जीवनशैली ही बदल गई। उसकी बहन की शादी अच्छे और संपन्न घर में हुई थी लेकिन वो कभी भी गीता पर ध्यान नहीं देती थी क्योंकि उसकी बड़ी बहन आज भी अपने पिता का

प्यार न पाने का प्रतिशोध गीता से ही निकालती थी। गीता का भाई भी शादी के बाद अपनी ही दुनियां में मगन रहने लगा था। गीता के मां की भी उम्र हो चली थी जिस कारण वो चाह कर भी गीता के लिए कुछ नहीं कर पा रही थी। इसी बीच गीता के भाई ने उसकी शादी तय कर दी। गीता की जिस लड़के से शादी तय की गई थी वो लड़का अच्छा नहीं था और ये सब गीता के भाई को पता था। लेकिन मां और गीता को ये सब नहीं पता था। शादी की तैयारियां चल ही रही थी कि अचानक किसी के माध्यम से गीता की मां को लड़के के बारे में पता चल गया और वो अपने बेटे से इस बार में जब पूछने गई तो उसने पूरे घर में तोड़-फोड़ शुरू कर दिया। घर में अब गीता के भाई की ही केवल चलती थी। उसके भाई ने ऐसा उपद्रव किया कि मां डर गई और चुप हो गई। गीता ने जब इसकी वजह जानने के लिए मां से पूछा तो मां ने उसको लड़के के बारे में उसको सबकुछ बता दिया। अपने भाई की सोच के बारे में जानकर गीता के पैरों तले से जमीन ही खिसक गई लेकिन फिर वो संस्कार वश कुछ भी न बोल पाई। लेकिन उसकी मां बहुत ही परेशान रहने लगी। मां को इस तरह से परेशान होते देखकर गीता ने मन ही मन सोचा कि सब कुछ मेरी ही वजह से हो रहा है। उसने इन सब को अपनी तकदीर मान कर सब भगवान पर छोड़ दिया और शादी के लिए तैयार हो गई।

देखते-देखते उसकी शादी का दिन भी आ गया और वह शादी करके अपने ससुराल चली गई। इधर गीता का भाई उसकी शादी करके ऐसे खुश हो गया जैसै कि उसके गंगा स्नान किया हो। और हो भी क्यों ना उसे तो गीता से प्रतिशोध लेना था, जिसमें वो सफल भी हो गया था। उधर जब गीता अपने ससुराल पहुंची तो वहां का परिवेश देखकर वो दंग रह गई। जिस परिवार में उसकी शादी की गई थी उसमें केवल लड़का ही नहीं पूरा का पूरा परिवार ही गलत था। इस बात को भी गीता ने अपनी किस्मत मान लिया और ससुराल वालों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की कोशिश में लग गई। लेकिन उसे कहां पता था कि उसका ये नया जीवन उसके लिए ऐसा खतरनाक मोड़ साबित होगा जहां से निकलना गीता के लिए अत्यंत ही मुश्किल भरा हो जाएगा। अपने ससुराल में गीता ही केवल पढ़ी-लिखी औ सुंदर थी। इस कारण से उसके ससुराल वाले उसे तनिक भी पसंद नहीं करते थे। किसी न किसी बात को लेकर वो लोग गीता को आए दिन प्रताड़ित करने लगे। जिस लड़के से गीता की शादी हुई थी वो इतना ज्यादा बुरा व्यवहार गीता के साथ करता था कि गीता एक दम से शून्य हो जाती थी। लाख कोशिशों के बावजूद भी वो अपने ससुराल वालों के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पा रही थी। अपने ससुराल वालों के व्यवहार के बारे में वो अपनी मां को बताना चाहती थी लेकिन फिर वो यह सोचकर खामोश रह जाती थी कि अगर उसने मां को बता भी दिया तो वो क्या कर पाएगी।

समय बीतता गया और गीता की स्थिति और अधिक खराब हो लगी। उसके बच्चे भी हो गए लेकिन गीता सुधरने का नाम ही नहीं लेता था। उसको न तो गीता की चिंता थी और ना ही अपने बच्चों की। वो अपने ही दुनिया में खा-पीकर मस्त रहता था। उसके इस आदत की वजह से घर की स्थिति दिन-प्रतिदिन और अधिक बिगड़ने लगी। जब कभी भी गीता उससे कोई शिकायत करती थी तो वह गीता को मारने-पीटने लगता था। अब पानी सिर से उपर जा चुका था। गीता की सहनशक्ति समाप्त होने लगी थी। और हो भी क्यों ना, कोई भी चीज एक समय तक ही अच्छी लगती है। गीता ने सोचा ऐसे ही अगर चलता रहा तो एक दिन ऐसा आएगा कि मेरे बच्चों का पूरा भविष्य की खराब हो जाएगा। उसने मन ही मन निश्चय किया कि नहीं अब और नहीं ये सब।

मैंने तो ये सब बर्दाश्त कर लिया लेकिन मैं अपने बच्चों के भविष्य को खराब नहीं होने दे सकती। उसने अपना आत्मविश्वास जगाया और अपने ससुराल वालों तथा अपने पति का सामना करने की सोची। उसने सोचा अब बहुत हो गया संस्कार। जब सामने वाले को मेरे किसी भी शिष्ट आचरण से कोई फर्क नहीं पड़ता है तो मुझे भी अपनी और अपने बच्चों की परिस्थिति बदलने के लिए कोई कठोर कदम उठाना ही होगा। अब वो अपने ससुराल वालों के सामने डटकर खड़ी रहने लगी। जब भी उसके ससुराल वाले या उसका पति उसे किसी भी प्रकार से प्रताड़ित करने की कोशिश करते तो वो उनका जवाब उन्हीं की भाषा में देने लगी। धीरे-धीरे समय गुजरता गया और गीता ने छोटा-मोटा काम भी शुरू कर दिया जिससे उसकी और उसके बच्चों की जरूरतें पूरी होने लगी। अब वो किसी भी प्रकार से अपने ससुराल वालों या अपने पति पर निर्भर नहीं थी। उसने अपने परिवार के विपरित जाकर अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया तथा उनमें भी अपनी तरह अच्छे संस्कार दिए। धीरे-धीरे गीता का काम भी अच्छा चलने लगा जिससे उसकी परिस्थिति भी सुधरने लगी। इधर उसके बच्चे भी बड़े हो गए। अब चाहकर भी गीता के ससुराल वाले या उसका पति उसको प्रताड़ित करने की कोशिश नहीं करते थे क्योंकि वो लोग जब भी गीता को कुछ बोलने को होते तो उसके बच्चे उसके सामने चट्टान की तरह खड़े हो जाते थे। बच्चों का अपनी मां के प्रति ऐसा प्रेम देखकर गीता के पति को भी डर लगने लगा था। वो भी अब गीता को कुछ बोलने से पहले सौ बार सोचने लगा।

समय के साथ गीता की स्थिति भी अच्छी हो गई। उसके बच्चे भी पढ़-लिखकर अच्छी पदों पर सरकारी सेवा में नियुक्त हो गए। अब क्या था गीता के जीवन चारो तरफ बस खुशियां ही खुशियां थी। जो ससुराल वाले कदम-कदम पर गीता के लिए काँटे बिछाते रहे ताकि वो कहीं अपने मकसद में कामयाब न हो जाए वही लोग आज उसके करीब भी जाने से डरने लगे। गांव में भी सभी जगह गीता की प्रशंसा होने लगी। गांव वालों के लिए गीता प्रेरणास्रोत का काम करने लगी थी। गीता के इस कदम से गांव की औरतों को भी अपने उपर गर्व महसूस होने लगा। गांव की हर औरत गीता जैसा बनने की कोशिश करने लगी। चारो-ओर गीता की तारीफ होते देख उसके ससुराल वालों को बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था लेकिन वो कर भी क्या सकते थे। गीता ने अपनी सोच और समझ में के बल पर एक ऐसी मिशाल कायम कर दिया था जिसको मिटा पाना संभव नहीं था।

इसीलिए कहते हैं कि हार और जीत मन से होती है। मन से हारा हुआ व्यक्ति हर जगह हार जाता है लेकिन जो व्यक्ति मन में जीत का जज्बा रखता है उसके मार्ग में चाहे कितनी भी बाधाएं क्यों न उत्पन्न कर दी जाए, देर-सबेर उसकी जीत पक्की होती है। जिसका एक उदाहरण मेरी इस कहानी की पात्र गीता है। जब तक वो अपनी परिस्थितियों को अपनी किस्मत मानकर जीती रही तब उसके जीवन में दुख और तकलीफ के अतिरिक्त कुछ नहीं था। लेकिन जैसे ही उसने मन में दृढ़निश्चय किया कि नहीं मैं अब और तरह का जीवन नहीं जी सकती, उसकी मनोस्थिति के साथ-साथ उसकी परिस्थिति भी बदल गई।

मनोरंजन के साधन में समय अनुसार परिवर्तन

सुश्री सोनी कुमारी साव
लेखाकार

परिवर्तन समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। जिस प्रकार समय अनुसार हमारे समाज में हर साधनों का परिवर्तन होता है ठीक उसी तरह हमारे मनोरंजन के साधन में भी परिवर्तन आया है। पहले लोग आदि काल में नृत्य कर अपना मनोरंजन स्वयं करते थे। फिर राजा महाराजाओं का शासन आया जिसमें यह नर्तकियों के नृत्य और संगीतकारों के संगीत सुनते थें। तानसेन जैसे संगीतकार जो नवरत्नों में से एक थे, इसका एक सबसे बड़ा उदाहरण है कि समय के अनुसार परिस्थितियों में बदलाव आया और लोगों के लिए मनोरंजन का मूल स्रोत किताबें और समाचार पत्रों के माध्यम से बना क्योंकि उस समय लोगों में विद्रोह और देश बचाओ आन्दोलन चलता था और अपनी अपनी बात लिख कर और बोल कर लोगों को बतलाते थे। फिर समय के साथ कुछ और परिवर्तन हुआ। देश और दुनिया ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने कदम कुछ आगे बढ़ाये और बहुत सारे यंत्रों का आविष्कार किया उसमें से रेडियो मनोरंजन व्यवसाय का एक मुख्य स्त्रोत बना। अब रेडियो के माध्यम से लोग बिना चित्र देखे लाइव मनोरंजन सुना करते थे। साथ में, समाचार के माध्यम से दूर देश की खबरों की भी जानकारी प्राप्त हो जाती थी। उसके बाद चलचित्रों का अविष्कार हुआ मतलब की चित्र और ध्वनि पहली बार एक साथ देखा गया था और अन्ततः टेलीविजन एक बिंदु पर विकसित हुआ। सक्षम टेलीविज़न के माध्यम से ब्रॉडकॉस्टर ने लोगों के घरों में घटनाओं और मनोरंजन को पेश करने का अवसर हासिल किया।

टेलीविजन हमें दुनियां में देखने की सुविधा देता है अन्यथा हम कभी नहीं जानते की टी.वी. सिर्फ आविष्कार नहीं था यह बहुत सारे खोजों का संचय था। यह समय-रेखा उन खोजों का संचय कर चला आ रहा है और उन्हीं के बदलाव की रेखा चहुमूखी देखने को मिल रही है।

टेलीविजन को 1959 में भारत में पेश किया गया था लेकिन कई सालों तक यह सरकारी स्वामित्व वाली दूरदर्शन तक ही सीमित रहा जिसमें एक दो बार साप्ताहिक एक घंटे के कार्यक्रम ही थे। यह कह सकते है कि गिन चुन कर ही कार्यक्रम दिखाए जाते थे। लेकिन लोगों के लिए वही बहुत था। आज भारत में उपलब्ध टेलीविजन एवं इंटरनेट विकल्पों में एक चिह्नित बदलाव आ रहा है जिसमे 48 ब्रेक थ्रू ब्रॉड-कॉस्टर अनुमानित 60000 केबल ऑपरेटर, 6000 मल्टी सिस्टम ऑपरेटरों (एम. एस. ओ.) और डी.टी. एच. ऑपरेटर है। सभी सार्वजनिक सेवा प्रसारण मंत्रालय के साथ पंजीकृत 850 से अधिक टी.वी. चैनल है। 2016 में ओ.टी.टी. (ओवर-द- टॉप) मिडिया सेवाओं के प्रवेश के साथ 2016 में भारत की सामग्री

की खपत के क्रांति का आगमन देखा गया। सामग्री उत्पादित अभ्यास के रूप में परिभाषित किया गया है। इससे पारम्परिक तौर में एक तीर से दो निशाना वाला कार्य किया। चुनाव स्थलों, केबल या उपग्रह, डिश टेलीविजन के उपभोग से फेड-फीड, विकल्प के जरिये नये आन-डिमांड युग की ओर कदम बढ़ा रखा। ओ.टी.टी. बूम को देखते हुए भारतीय बाजार में 82% उपयोगकर्ता वर्तमान में 18% की तुलना में विज्ञापन एलइडी वीडियों-आन-डिमांड प्लेटफार्म (जैसे युट्यूब) पर लगाए गए है। जो सदस्य एलईडी विडिओ आन डिमांड सेवाओ (जैसे नेट फ्लिक्स और अमेजन प्राइम) जैसे सामग्री के लिए भुगतान करते है। कई कारणों से भारत में आन डिमांड मॉडल के लिए अनुकूल है इसका सबसे महत्वपूर्ण असर इन्टरनेट और स्मार्टफ़ोन के बढ़ते प्रवेश होने के कारण है। इन्टरनेट और स्मार्टफ़ोन इस्तेमाल किए बिना आज कल के बच्चों का काम न बने। इस इन्टरनेट ने हमारी पूरी दुनिया को एक सूत्र में बांध सा लिया है। फोन के जरिये निजी काम भी हो रहे हैं और इन्टरनेट के उपयोग से लोगों की बहुत सारी परेशानियों का हल भी यह नेट और फ़ोन काम के साथ-साथ हमारे मनोरंजन का महत्वपूर्ण माध्यम है। आज प्रत्येक जन के पास कुछ हो न हो एक स्मार्ट फोन जरुर होता है। लोग इस फ़ोन के जरिये मनोरंजन कर दिखा भी रहे और अपनी आय का साधन बना रहे है। साहित्य की समीक्षा परियोजना की स्पष्ट समझ के लिए मुझे इन्टरनेट पर उपलब्ध कुछ शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और लेखकों के कई पत्रिकाओं, लेख और कागजात के माध्यम से पता चला है। उनमें से कुछ समीक्षा और उनके अध्ययन का सारांश कुछ इस प्रकार है:-

मनोरंजन टेक्नोलॉजी, एनबीसी यूनिवर्सल, एनवाई अमेरिका का एक संक्षिप्त इतिहास:

यह लगभग निश्चित है कि आने वाले दशकों में नये मनोरंजन के हर छोटी सी पहलू में बदलाव आएगा। किसी की कल्पना से परे कमी की हमारी दुनिया में तकनीकी, व्यवसायों और उद्योगों के सम्बन्ध में इस तरह के एक परिमाण व्यापक पहुँच का अवसर देखा गया है। इस कहानी के अगले अध्याय को निश्चित रूप से इस उद्योग के बीच में और उद्योगों के बीच के बारे में सी.एल.एल. की आवश्यकता होगी। आने वाले दिनों में हमें इस सभी के माध्यम से और भी बदलाव देखने को मिल सकता है और हमारा यह कहना भी गलत नहीं होगा की हम अपने इतिहास के पन्नों में लिखी बातों को पढ़ाने वाले कल को देखते है। कोशिश करते हैं कि आने वाले कल इतना विकसित हो गया, जिसका हम अनुमान नहीं लगा सकते।

डिजिटल मिडिया : ओन्डमैड की अवसाद की वृद्धि राजत बनर्जी, वरिष्ठ निदेशक, ऋषभ महेश्वरी, वरिष्ठ सलाहकार, डेलाईट भारतीय मिडिया अधिकारी :

ज्याद से ज्यादा मिडिया की खपत पर और अधिक समय लगता है और अधिक से अधिक खपत डिजिटल मिडिया पर पेश करती है और पारंपरिक मिडिया पर अधिक समय लगता है। यह वृद्धि मोबाइल उपकरणों की प्रौद्योगिकी और इंटरनेट कनेक्टिविटी से सुधार के लिए श्रेय दी जा सकती है। जिससे दर्शकों को विकल्प पर जाने के लिए विकल्पों के साथ डिजिटल मिडिया सामग्री तक पहुँचने के लिए प्रदान किया गया है। ऑडियो और विडिओ अग्रणी ऑनलाइन यातायात जेनरेटर के रूप में उभरा है और उन्हें इंटरनेट का प्रवेश और बढ़ाने के साथ पाई जाती है। उन्हें अपने हिस्से को बढ़ाने की उम्मीद है। पारम्परिक मिडिया से डिजिटल मिडिया की ओर विधायक वरीयता के साथ बाटने वाले बजट को खर्च कर रहे है।

क्या भारतीय मनोरंजन उद्योग एक डिजिटल भविष्य की ओर है? दिनेश सिंह, अपस्टर्स कम उत्पादन हाउस के संस्थापक के अनुसार :

डिजिटल प्रोपोर्ट्स के लिए औसत सह एनएसयुआब के बढ़ते आत्मीयता उद्योग को मनोरंजन की खपत और राजस्व पीढ़ी के पुराने पैराडिंग्स को फिर से भरने के लिए मजबूर कर रहा है। कैपिटल के लिए इन रुझानों पर अपने जेट ई को पूरा करें, रचनाओं और सामग्री प्लेटफार्म महत्वपूर्ण भूमिका के साथ उच्च क्षेत्रीय सामग्री बनाने के लिए क्षेत्रीय दर्शकों की बढ़ती संख्या में सेवाओं की अपनी रणनीति को संशोधित कर रहे है।

किस्मत

श्री संजीव कुमार दुबे,
लेखाकार

सारी दुनिया आज किस्मत की चपेट में है। हर आदमी की किस्मत जन्मपत्री के रूप में पैदा होते ही बनवा ली जाती है और फिर शुरू होता है खेल, कदम फूंक-फूंक कर रखने का। किस दिन बाहर जाना है, किस दिन क्या करना है, क्या नहीं करना है, कौन सा दिन सेहत के लिए हानिकारक है, वगैरह-वगैरह और फिर सारे जुगाड़ करके भी अपनी मर्जी का फल ना मिले तो, सारा दोष किस्मत के सर मढ़ देना। वहीं कुछ लोग इस बात पर भरोसा करते हैं कि कर्म ही किस्मत है। हालांकि कभी-कभी सच्चे दिल से की गई मेहनत भी रंग नहीं लाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। सिर्फ अपने कर्मों को दोष देना भी ठीक नहीं है।

ऐसे में जरूरी है कि गहराई से समझा जाए कि किस्मत है क्या। कहा जाता है कि जब आदमी सही वक्त पर सही जगह मौजूद होता है तो उसके सभी काम बन जाते हैं। आम इंसान इसे किस्मत का नाम देता है पर हकीकत यह है कि सही वक्त पर सही जगह होने के लिए आपको कर्म भी सही करने पड़ेगें। अब हमारी अपनी सोच यह है कि सागर की ऊँची लहरों, हवाओं के तीव्र वेग, आँधी और तूफान से भी किस्मत नहीं बदलती। किसी की किस्मत अंधेरों में दब कर रह जाती है, किसी की रौशन हो जाती है। किसी जिंदगी में यदि खुशियां हैं तथा यदि वह इसका आधार किस्मत को मानें तो यह गलत नहीं है। महान बनने से ज्यादा जरूरी महानता के अर्थ को समझना होता है। जिंदगी के मायने समझना और स्वयं को बदलते रहना परि-स्थितियों से संघर्ष करना जिसने सीख लिया वह कभी किस्मत को दोष नहीं देगा। कार्य कुशलता सबसे बड़ी किस्मत है और इससे बड़ी किस्मत शायद किसी के पास नहीं। जो काम हमारे लिए असंभव बन जाता है उसे हम किस्मत का दोष समझते हैं परंतु ऐसा नहीं है बल्कि इससे यह सिद्ध होता है कि हममें सही लगन की कमी है। समाज के सभी वर्गों के लोग किस्मत को महत्व और दोष देते हैं। निम्न वर्ग के लोग रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था न होने के कारण किस्मत को दोष देते हैं। मध्यम वर्ग के लोग आवश्यकता से अधिक न मिलने के कारण किस्मत को दोष देते हैं एवं कुछ वर्ग के लोग उपरोक्त के अलावा दूसरी परे-शानियों में फंसे होने पर किस्मत को दोष देते हैं यानी प्रत्येक व्यक्ति अपने नजरिये से किस्मत को दोष देता है। दरअसल संसार रूपी उद्यान में अनेक फूल हैं और उनकी खुशबू भी अलग-अलग है। हजारों लोगों की दुआओं या बद्दुआओं से किस्मत नहीं बदलती पर वक्त के झोंके से परिस्थितियों के साये में रह कर संघर्ष करने से किस्मत और किस्मत वाले दोनों बदल जाते हैं। दर्द को मन में दबाकर हंसना, दुखों को सुख की संज्ञा देना और अंधियारों से चैन पाने वाला मनुष्य अकेला होते हुए भी जीने की राह ढूँढ लेता है। भाग्य का

साथ ना देने पर या हाथ की लकीरें फीकी होने के कारण व्यक्ति यदि संघर्ष करना ही छोड़ दे तो फिर पतन का मार्ग प्रशस्त होगा। उसमें लाखों की मौत, बेबसी और हार शामिल होगी। इसलिए कई लोग कहते हैं कि उन्नति वही करते हैं जिनकी किस्मत अच्छी होती है लेकिन मेरी अपनी सोच है कि किस्मत उनकी अच्छी होती है जो संघर्ष करते हैं तभी उन्नति करते हैं और दूसरों को भी संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

कहानी किसे कहते है ?

श्री आर.बी. पासवान
सहायक निदेशक (हि.शि.यो.), भुवनेश्वर

कहानी गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विद्या है जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। हिन्दी गद्य की वह विद्या है जिसमें लेखक किसी घटना, पात्र अथवा समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा देता है जिसे पढ़कर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है, उसे कहानी कहते है।

कहानी कथन को भाषा स्वर के उतार-चढ़ाव, शारीरिक गति, हाव-भाव आदि के उपयोग से श्रोताओं के लिए किसी कहानी की घटनाओं और चित्रों को सजीव बनाने की कला के रुप में परिभाषित किया जा सकता है। कहानी कथन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि कहानी को पूरा करने और उसे फिर से बनाने के लिए श्रोता किस प्रकार से कहानी के दृष्य और विवरण अपने मस्तिष्क में विकसित करते है। भारत के संदर्भ में जहां बहुसांस्कृतिक समाज है, कहानी स्कूलों में शिक्षण शास्त्र का एक सशक्त माध्यम हो सकती है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रुपरेखा इस बात की अनुशंसा करता है कि स्कूली ज्ञान को समुदाय के ज्ञान से जोड़ा जाए। विभिन्न समुदायों में ज्ञान के संसाधन के रुप में प्रचलित कहानियां स्कूल को समुदाय से जोड़ने का एक अच्छा साधन है। कहानियां बच्चों को समूह में चुप्पी तोड़ने, समुदाय से सीखने, कहानी लिखने, कहानी की घटनाओं पर आधारित रचनात्मक चित्र बनाने और अर्थपूर्ण सीखने के अनुभव बताने के लिए प्रेरित करती है। स्कूलों में यह महत्वपूर्ण विधा बच्चों के लिए उपयोगी शिक्षण उपकरण है। कहानी के उपयोग से विषयों में भी रोचकता आती है। भाषा का कहानी कहने की कला से स्वाभाविक जुड़ाव होता है। दुसरें विषयों में भी कहानी के उपयोग से जांच-पड़ताल, खोज-बीन का काम किया जा सकता है।

कहानी क्या है?

कहानी को परिभाषित करने के पहले एक बात स्पष्ट करना जरुरी है कि जिस प्रकार गिली मिट्टी को अलग-अलग रुपों में ढाला जा सकता है उसी प्रकार हमारी कहानियां भी अपनी प्रकृति, सुनने, पढ़ने वालों और परिस्थिति के अनुसार अपने-आपको अलग-अलग रुपों में ढाल सकती है। कहानी के कुछ संभावित रुप उपन्यास, कविता, नाटक चलचित्र, संस्मरण ऑडियो, दृष्य (चित्र) आदि है।

मेहनत के फल का महत्व

श्री आर.बी. पासवान
सहायक निदेशक, हिन्दी शिक्षण योजना

एक नगर में प्रतिष्ठित व्यापारी रहते थे जिन्हें बहुत समय बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी, उसका नाम प्रकाश रखा गया। प्रकाश घर में सभी का दुलारा था, अति कठिनाई एवं लम्बे समय इंतजार के बाद संतान का सुख मिलने पर घर के प्रत्येक व्यक्ति के मन में व्यापारी के पुत्र प्रकाश के प्रति विशेष लाड़-प्यार था जिसने प्रकाश को बिगाड़ दिया था। घर में किसी भी चीज का आभाव नहीं था, प्रकाश की माँग से पहले ही उसकी सभी इच्छाएँ पूरी कर दी जाती थी। शायद इसी के कारण प्रकाश को ना सुनने की आदत नहीं थी और ना ही मेहनत के महत्व का आभास था। प्रकाश ने जीवन में कभी आभाव नहीं देखा था। इसलिए उसका नजरिया जीवन के प्रति बहुत अलग था और वहीँ व्यापारी ने कड़ी मेहनत से अपना व्यापर बनाया था। ढलती उम्र के साथ व्यापारी को अपने कारोबार के प्रति चिंता होने लगी थी। व्यापारी को प्रकाश के व्यवहार से प्रत्यक्ष दिखता था की उसके पुत्र को मेहनत के फल का महत्व नहीं पता, उसे आभास हो चुका था कि उसके लाड़ प्यार ने प्रकाश को जीवन की वास्तविकता और जीवन में मेहनत से बहुत दूर कर दिया है, गहन चिंतन के बाद व्यापारी ने निश्चय किया की वो प्रकाश को मेहनत के फल का महत्व स्वयं सिखाएगा, चाहे उसके लिए उसे कठोर ही क्यों न बनना पड़े।

व्यापारी ने प्रकाश को अपने पास बुलाया और बहुत ही तीखे स्वर में उससे बात की, उसने कहा कि तुम्हारा परिवार में कोई अस्तित्व नहीं है, तुमने मेरे कारोबार में कोई योगदान नहीं दिया और इसलिए मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी मेहनत से धन कमाओं, तब ही तुम्हें तुम्हारे धन के मुताबिक दो वक्त का खाना दिया जाएगा। यह सुनकर प्रकाश को कोई फर्क नहीं पड़ा। उसने उसे क्षण भर का गुस्सा समझ लिया, लेकिन व्यापारी ने भी ठान राखी थी, उसने घर के सभी सदस्यों को आदेश दिया कि कोई प्रकाश की मदद नहीं करेगा और ना ही उसे धन के बिना भोजन दिया जाएगा।

प्रकाश से सभी बहुत प्यार करते थे जिसका उसने बहुत फायदा उठाया वो रोज किसी न किसी के पास जाकर धन माँग लेता और अपने पिता को दे देता, और व्यापारी उसे उन पैसों को कुएं में फेकने को बोलता जिसे प्रकाश बिना किसी अड़चन के फेंक आता और उसे रोज भोजन मिल जाता। ऐसा कई दिनों तक चलता रहा लेकिन अब घर के लोगो को रोज-रोज धन देना भारी पड़ने लगा। सभी उससे अपनी कन्नी काटने लगे। जिस कारण प्रकाश को मिलने वाला धन कम होने लगा और

उस धन के हिसाब से उसका भोजन भी कम होने लगा।

एक दिन प्रकाश को किसी ने धन नहीं दिया और उसे अपने भूख को शांत करने के लिए गॉव जाकर काम करना पड़ा। उस दिन बहुत देर से थका हारा व्यापारी के पास पहुंचा और धन देकर भोजन माँगा, रोज के अनुसार व्यापारी ने उस धन को कुएं में फेंकने का आदेश दिया जिसे इस बार प्रकाश सहजता से स्वीकार नहीं कर पाया और उसने पलटकर जबाब दिया- पिता जी मैंने इतनी मेहनत करके, पसीना बहाकर इस धन को लाया और आपने मुझे एक क्षण मे इसे कुएं में फेकने को कह दिया। यह सुनकर व्यापारी समझ गया कि प्रकाश को मेहनत के फल का महत्व समझ आ गया है। व्यापारी भली-भाँती जानता था कि उसके परिवार वाले प्रकाश की मदद कर रहे है तब ही प्रकाश इतनी आसानी से धन कुएं में डाल आता था, लेकिन उसे पता न था कि एक दिन सभी परिवार जन प्रकाश से कन्नी कट लेंगे, उस दिन प्रकाश के पास कोई विकल्प शेष नहीं होगा, व्यापारी ने प्रकाश को गले लगा लिया और अपना सारा कारोबार उसे सौंप दिया।

आज के समय में उच्च वर्ग के परिवारों की संतानों को मेहनत के फल का महत्व पता नहीं होता और ऐसे में यह दायित्व उनके माता-पिता का होता है कि वो अपने बच्चों को जीवन की वास्तविकता से अवगत कराएँ। लक्ष्मी उसी घर में आती है जहाँ उसका सम्मान होती है। मेहनत ही एक ऐसा हथियार है जो मनुष्य को किसी भी परिस्थिति से बाहर ला सकता है। व्यापारी के पास इतना धन तो था कि प्रकाश और उसकी आने वाली पीढ़ी बिना किसी मेहनत के जीवन आसानी से निकाल लेते लेकिन अगर आज व्यापारी अपने पुत्र को मेहनत का महत्व नहीं बताता तो एक दिन व्यापारी की आने वाली पीढ़ी व्यापारी को कोसती।

अकेला

श्री दिनेश नारायण मुखी
पर्यवेक्षक

कंचन पुष्प भंडार, फूल की दुकान सचिवालय मार्ग किनारे बहुत सालों से अपने कारोबार के कारण मशहूर हैं। फूल प्रेमियों को लुभाने के लिए सुंदर-सुंदर गुथे हुए मालाएं सुंदर-सुंदर गुलदस्ते दुकान में भरे पड़े हैं। दुकान में हमेशा ग्राहकों की भीड़ लगी रहती है।

सत्यजीत अक्सर दुकान में आया करते हैं क्योंकि इस दुकान के साथ उनका पुराना रिश्ता जुड़ा हुआ है वह दुकान में आकर फूल आदि की खरीदारी भी करते थे, चाहे शादी विवाह हो या पूजा का मौका या फिर किसी को बधाई के तौर पर देनी हो तो इसी दुकान से फूल लिया करते थे। इस बात को विनोद जी भली-भांति जानते थे।

विनोद जी की साइकिल ठीक दुकान के सामने ही रुक गई वह सत्यजीत दास जी के लिए एक बढ़िया सुंदर गुलदस्ता खरीदेंगे, क्योंकि आज उनका रिटायरमेंट है।

फेयरवेल मीटिंग चल रहा है सत्यजीत बाबू को बीच में बिठा के उन्हें पुष्प और उपहार देकर सम्मानित किया गया। सब उनके बारे में कुछ शब्द बोल रहे थे पर वह अपने जीवन के पन्ने पलट रहे थे।

जन्म से लेकर आज तक पूरे 60 साल बीत चुका है इसी महीने उनका जन्म हुआ था। तब बहुत खुश थे उनके माता-पिता और सारे रिश्तेदार। जब बड़े हुए तो हमेशा इस महीने का इंतजार रहता था क्योंकि इसी महीने में आता है उनका जन्मदिन। इस मौके पर घर में अच्छा पकवान बनता है। सब मेहमान आते हैं। साथ में बढ़िया-बढ़िया गिफ्ट लेकर और इसे पाकर बहुत खुश होते थे। सत्यजीत धीरे-धीरे बड़े होने लगे और उनकी उत्सुकता घटने लगी जन्मदिन फिका होता गया वह बालक से किशोर और किशोर से युवा बनता गया उनका पढ़ाई खत्म हुआ नहीं था कि पिताजी रिटायर हो गए। वे हमेशा बीमार रहते थे। उनकी चिकित्सा में बहुत पैसा खर्च होता था पिताजी के पेंशन पैसे से घर चलाना मुश्किल था। वह किसी को कुछ बोलते नहीं थे। गुमसुम अपने कमरे में पड़े रहते थे। खुद को अकेला महसूस कर रहे थे। किसी से मिलना बातें करना एक प्रकार से ठप हो गया था। शायद उन्होंने खुद को एक निकम्मा समझ लिया था। रिटायर होने के बाद सत्य-जीत से रहा नहीं गया। उन्होंने नौकरी के लिए कमर कस लिया था।। उन्होंने बहुत सारी परीक्षाएं दी इंटरव्यू दिया पर सफल नहीं हो सके। घर की परिस्थिति और बिगड़ती गई एक रोज उनके पिताजी भी चल बसे। घर पर सन्नाटा छा गया। एक बुढ़ी मां को साथ लिए क्या करेंगे? कुछ विकल्प भी नहीं सोच पा रहे थे सत्यजीत। मुश्किलें बढ़ती गई। घर पर जो था उसी में पिताजी का शुद्धिकरण किया। बिरादरी वाले आए और चले गए

सत्यजीत बिल्कुल अकेला हो गया। लेकिन उसे कुछ करना होगा, जीवन भी जीना होगा एक रोज पता नहीं उनके मन में क्या आया, वे चल पड़े कांचन पुष्प भंडार की ओर वहां जाकर उन्होंने काम मांगा। पुष्प भंडार का मालिक सत्यजीत के पिता को जानता था उन्होंने बिना सोचे उन्हें दुकान का अकाउंट देखने बैठा दिया और कैश संभालने को कहा। सत्यजीत दिन-रात कमरतोड़ मेहनत करने लगा। सरकारी नौकरी की परीक्षाएं एवं इंटरव्यू देता रहा। मेहनत रंग लायी और आखिर में उन्हें एक सरकारी नौकरी मिल गई। नौकरी के बाद घर में सुधार आने लगा। माता जी की जिद पर घर में नई नवेली बहू आ गई। बहुत खुशी से सत्यजीत अपनी सुखी परिवार के साथ रहने लगा। मजे में दिन बिता गया। बाल बच्चे भी हो गए। उनके दो बच्चे हुए, एक लड़की और एक लड़का। लड़की का विवाह हो चुका है। लड़का अभी बेंगलुरु में सर्विस कर रहा है और उसने वहीं पर घर ले लिया है। फेयरवेल मीटिंग का आखिरी पड़ाव और सत्यजीत सोच रहे हैं की रिटायरमेंट के बाद वह भी अकेले हो जाएंगे। क्या करेंगे दिनभर? कैसे बिताएंगे समय? कहीं उनके पिताजी की तरह..... बड़ा बाबू! ! ! कुछ संदेश... माइक्रोफोन को सत्यजीत की ओर बढ़ाकर विनोद जी बोल रहे थे। सत्यजीत ने हड़बड़ा कर माइक्रोफोन हाथ में लिया पर कुछ बोल नहीं पाए। वह मन ही मन अपने पिताजी के अकेलेपन को महसूस कर रहे थे। उनकी आंखों से सिर्फ दो बूंद आंसू टपक पड़े।

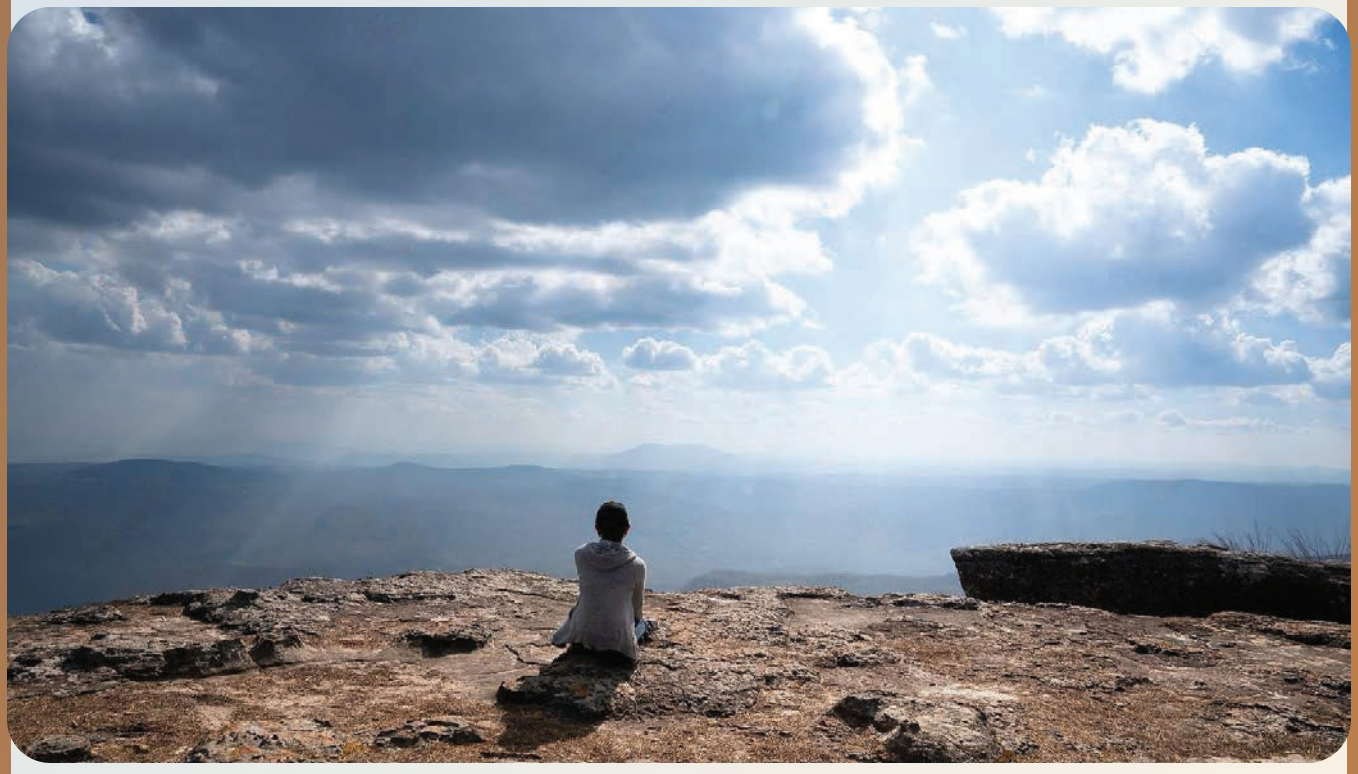

चंचल मन

श्री ओम प्रकाश
सहायक लेखा अधिकारी

मन तू कब मानेगा?
अर्थात स्वरूप को अपने कब पहचानेगा?
सही-गलत को कब पहचानेगा, मन तू कब मानेगा?
करता रहा मैं वो सब, जो कहता आया तू अब तक,
ऐसे ही मनमानी करेगा तू कब तक?
बनकर कस्तूरी मृग ईधर-उधर भटकेगा कब तक?
आनंद रूपी कस्तूरी है, अपने ही भीतर जिसे जाना नहीं अब तक!
बना रहा तू हरदम भोगी, अब तो बन जा तू योगी,
बनकर भ्रमर कब तक फूलों को छेड़ेगा?
अपनी चंचलता को तू कब तक छोड़ेगा?
थकता नहीं, घटता नहीं तू बढ़ता ही जाता है!
जैसे बचपन के बाद जवानी फिर बुढ़ापा आता ही जाता है।
मन-मर्जियां करने में तुझे कितना मजा आता है!
गलतियां करे तू और सजा ये शरीर पाता है।
क्या सोच करें बीती बातों का,
ये जीवन खेल है कुछ दिन रातों का!

भ्रष्टाचार

श्री प्रदीप कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

सब कहते हैं! भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार!
पर नहीं बताता कोई इसका आधार।
और क्या है इसका उपचार?
बस सब कहते हैं! भ्रष्टाचार! भ्रष्टाचार!
जब शाश्वत नियम से लोग भटकते हैं,
लोभ लालच में वे अटकते हैं।
सुख सुविधा देख दूसरों की,
जब किसी का मन ललचाता है,
तो वहीं भ्रष्टाचार अपना सिर उठाता है।
बेईमान कहते ईमानदार तो पागल है,
ईमानदारी तो रेगिस्तान में बरसने वाला बादल है।
क्या अनैतिक तरीके से पैसे कमाना ही है भ्रष्टाचार?
और लापरवाही कर्तव्य में कहां का है श्रेष्ठ आचार?
भ्रष्टाचारी भोगता अनेकों भोग धन की वर्षा से,
नहीं जाएगा भ्रष्टाचार केवल चर्चा से।
जैसे लौह तत्व की कमी से होता रक्ताल्पता का रोग है,
ईमानदारी के अभाव में होता भ्रष्टाचार का रोग है।
ईमानदारों को नहीं मिलता प्रशंसा के ओस,
बेईमान निकालते ईमानदारों में दोष।
पर सच तो यह है यह भ्रष्टाचारी ज्यादा दिन सुख न भोग पाता है,
रोग व्याधि अन्य विपत्तियां एक दिन सारा धन छीन ले जाता है।
फिर अंत में जेल की हवा वह खाता है,
पर यह बातें बेईमान कहां समझ पाता है।
जैसे स्वच्छता के अभाव में तुलसी का पौधा सूख जाता है,
सम्मान न हो तो ईमानदारी भी विलुप्त हो जाता है।
अगर मिटाना है भ्रष्टाचार के रोग को,
करना होगा सम्मान ईमानदारी के योग को।

जो भी है चलता जाता है

श्रीमती वीणापाणी महान्ति
वरिष्ठ लेखाकार

क्यों पीट रहा सर, उस चौखट पर,
जिसे समय की सीमा लांघ गई।
रुकना है रुक पर याद रहे,
ठहरेगा कोई साथ नहीं।

जिस राह से निकल कर गया समय,
वो राह कहां ठहरता है।
जो आज है वो कल क्या होगा,
ये वही समय बदलता है।

जो भी है चला जाता है।
क्या कहूं कि उड़ता वह पंछी,
बस तिनका लेकर जाता है।
मैं तो कहता हर रोज सुबह,
सूरज से मिलकर आता है।

उन्नति का कारोबार सदा,
सपनों के दम पर चलता है।
बीज लगे जैसा दिल पर,
कल वैसा लगता जाता है।
जो भी है चला जाता है।

क्या सुना कभी वो विश्व कहीं,
जो ना ध्वस्त हुआ या फिर बना नहीं।
सागर थमा या पर्वत भी,
कभी जगह से हिला नहीं।
निर्माण नार स्तंभ टिकी,

परिवर्तन की अपनी गाथा है।
कभी रुका नहीं ना रुक सकता है।
जो भी है चला जाता है।
जो भी है चला जाता है।
जो भी है चला जाता है।

बुराई या अज्ञानता

श्री विरेन्द्र यादव
वरिष्ठ लेखाकार

बुराई अज्ञानता का परिणाम है। कोई व्यक्ति यदि कुछ गलत करता है तो उस पर बुराई का ठप्पा लगता है या नहीं यह बस संख्या और ताकत का सवाल है। यह इस पर निर्भर करता है कि आपके साथ कितने लोग हैं। अगर किसी बुरे काम में आपके साथ पूरा शहर आ जाता है तो वह एक सही चीज बन जाएगी। आज हम उन "सही चीजों" के साथ कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते जो अतीत में लोगों ने किया है क्योंकि आज की भौतिकवादी सोच हमें ऐसा करने पर मजबूर करती है। अच्छाई और बुराई का संघर्ष हमेशा से बना रहा है क्योंकि यह न तो एक गुण है और ना ही यह एक कार्य है। यह तो बस भावनाएं हैं। अगर बुराई की बात करें तो यह जानने की गैर मौजूदगी है। अगर कोई चीज मौजूद है तो हम उसे नष्ट कर सकते हैं पर गैर मौजूदगी नहीं जा सकती हैं। जैसे आप अंधकार को नष्ट नहीं कर सकते, आपको बस प्रकाश को लाना होगा। इसी तरह से आप बुराई को नष्ट नहीं कर सकते। आपको बस ज्ञान और जागरूकता को लाना होगा। विभिन्न परिप्रेक्ष्य में बुराई अपना रूप, चेहरा और दिशा बदल देती है लेकिन सौभाग्य से अज्ञानता का केवल एक ही रूप है और इसे आसानी से निपटा जा सकता है। अज्ञानता से निपटने के लिए हमें अपने अस्तित्व को जानना होगा। हमें यह समझना होगा कि हमारे मन पर सबसे अधिक प्रभाव हमारे संगत का पड़ता है और यदि हम अकेले रहते हुए भी बुराई से घिरे रहते हैं तो इसका अर्थ है कि हम स्वयं गलत संगत में है और हमें स्वयं में ही बदलाव करना होगा क्योंकि बुराई एक भाव है जो हमारे अंदर ही पनप रही होती हैं और हम दूसरों को इसका जिम्मेदार मानते हैं। अगर धार्मिक मान्यताओं की बात करें तो जो काम एक धर्म में अत्यंत घृणित काम है वह किसी दूसरे धर्म में पवित्र माना जाता है। अगर इस पर हम गौर करें तो पता चलता है कि बुराई व्यक्ति की किसी चीज को अस्वीकार पाने की परिस्थिति का परिणाम है। आजकल अवसाद या डिप्रेशन की समस्या बढ़ती ही जा रही है। इसके पीछे बस एक ही मूल वजह है, वह है, विरोध। अवसाद क्या है? जब आप बहुत निराश, उदास होते हैं तो आपके अंदर क्या होता है? मूल रूप से आप किसी चीज के होने की अपेक्षा कर रहे थे और वह उस तरह नहीं हो सका जैसा आप चाहते थे। आप सोच रहे थे कि कोई व्यक्ति आपके अनुसार काम करेगा या क्या कोई चीज आपके हिसाब से होगी या यह संसार या आपका भाग्य आपके अनुकूल होगा पर वैसा नहीं हुआ। अब गौर करने की बात यह है कि आप किसी चीज के खिलाफ है क्यों? क्योंकि आपको उसमें बुराई या गलत बात दिखती है। सच कहे तो यह संसार या कोई व्यक्ति वस्तु हमारे हिसाब से हो यह जरूरी या संभव नहीं परंतु एक चीज जो संभव है, वह है हमारे व्यक्तित्व का हमारे अनुसार होना। अगर यह हो जाए तो इस दुनिया की सारी समस्या ही दूर हो जाएगी अर्थात व्यक्ति अपने आप को जान जाएगा

और बुराई का अंधकार दूर हो जाएगा। हमें स्वयं के ऊपर ज्यादा अधिकार होना चाहिए न कि दूसरों पर। धन-दौलत मनुष्य की खुशहाली के कई साधनों में केवल एक साधन है लेकिन यही सब कुछ नहीं है। अगर पैसा आप अपनी जेब में रखते हैं तो ठीक है पर जब यह आपके दिमाग में घुस जाता है तो यह एक बड़ा दुख बन जाता है क्योंकि वह इसकी जगह नहीं है। दुनिया में हमें केवल संपत्ति नहीं बनानी है बल्कि खुशहाली बनानी हैं। संपत्ति का उपयोग बुराई के अंधकार को बढ़ाने के लिए करना मूर्खता है क्योंकि समय के साथ संपत्ति की चाह बढ़ती ही जाती हैं। अगर धन के साथ ज्ञान का भी अर्जन हो तो फिर सर्वत्र प्रकाश ही होगा और बुराई का अंधकार हमेशा दूर रहेगा।

अमृत

श्री अभिषेक कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

23 मई, 2022 को मैं अपने गाँव में था। शाम के करीब पाँच बजे थे तभी मेरे एक मित्र का फोन आया और उन्होंने कुशल क्षेम पूछा। फिर दुखी मन से बताया कि हमारा मित्र और सहकर्मी अमृत निर्वाण आचार्य इस दुनिया में नहीं रहा। इस खबर को सुनकर मैं आश्चर्य और शोक के सागर में डूब गया। अभी चार दिन पहले ही तो मैं अमृत से मिला था। तब तो वह बिल्कुल खुश व स्वस्थ दिख रहा था। मैंने कारण जानना चाहा तो पता चला कि अचानक खाना खाते समय मृत्यु हो गई। अमृत मेरे अनुभाग में अक्सर शाम में आया करता था। अपने एक घनिष्ठ मित्र गौरव दास को मिलने तो मेरी भी मुलाकात होती थी। हमेशा मुस्कुराने वाला चेहरा, लोगों को हसांने वाला व्यक्तित्व अमृत इतनी जल्दी परिवार व दोस्तों को छोड़ जाएगा यकीन नहीं होता। काल की कैसी निष्ठुर गति है! ओह! बड़ा ही हृदय विदारक दुर्घटना है जिसने ए. जी. ऑफिस सहित ए. जी. कॉलोनी को झकझोर दिया।

अमृत से मेरी जान-पहचान 2020 में कॉलोनी के मैदान में हुई तब वह अपने दोस्त मल्लिक, गौरव और शुभंकर के साथ दौड़ने आता था। हम सब मिलकर व्यायाम करते थे। तब अमृत सबसे धीरे-धीरे दौड़ लगाता था तो सब मित्र उससे मजाक भी करते थे। इससे तो तुम्हारा वजन कम होने की बजाय बढ़ेगा और फिर हँसी-ठहाके का दौर चल पड़ता था। उन दिनों वह अपना वजन कम करने के लिए कृत संकल्पित दिखता था। फिर हम मजाक करते कि शायद तुम शादी के लिए इतना पसीना बहा रहे हो। तो वह कहता हाँ, यह सच है। निष्ठुर कोरोना काल ने हमारे ऑफिस के बहुत सारे कर्मचारियों को हमसे छीन लिया परंतु वैक्सीनेशन के बाद जन-जीवन सामान्य सा होने लगा था। घर से लौटने पर मुझे अमृत की मृत्यु का कारण पता चला। डॉक्टर ने ब्रेन हैम्रेज को मृत्यु का कारण बताया। प्रत्यक्ष दर्शियों में से एक गौरव दास ने बताया कि उस दिन अमृत छुट्टी पर था। क्योंकि उसके पैरों की मांशपेशियों में दर्द था। संभवतः उसने डॉक्टर से दवा भी ली थी। करीब 2 बजकर 30 मिनट पर गौरव को अमृत की पत्नी का फोन आया। वह घबराई हुई थी। उसने गौरव को जल्दी अमृत के क्वार्टर पर जाने को कहा और बताया कि वह अमृत से फोन पर बात कर रही थी और वह खाना खाने वाला था तभी अचानक वह खाँसने लगा और कुछ बोल नहीं पा रहा है। गौरव तुरंत कुछ अन्य मित्रों के साथ अमृत के क्वार्टर पहुँचा। दरवाजा अंदर से बंद था। इमरजेंसी जानकर लोगों ने दरवाजा तोड़ा तो देखा कि अमृत चेतनाशून्य अवस्था में फर्श गिरा हुआ था। आनन-फानन में सब लोग उसे अस्पताल ले गए जहां डॉक्टर ने परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। हमेशा दोस्तों से घिरा रहने वाला अमृत उस दिन शवगृह में अकेले रह गया। अगले दिन उसके परिवार वाले आए तो दाह-संस्कार हुआ। अमृत के एक घनिष्ठ मित्र चंदन जी ने बताया कि दाह-संस्कार में कुछ मित्र और परिवार जन ही थे। बुढ़ी माँ और पत्नी का रोना सबकी आँखो को नम कर रहा था। सब

लोग हैरान थे। बिल्कुल स्वस्थ दिखने वाला और हमेशा खुश रहने वाला अमृत अचानक कैसे मर सकता है? अमृत को सहायक लेखा अधिकारी बने हुए एक वर्ष भी नहीं हुए थे और उसकी शादी का एक साल ही हुआ था। वह महज 32 साल का था। नियति बड़ी निष्ठुर है!

मुझे 7 जून 2021 का दिन बड़ा स्पष्ट रुप से याद है, उन दिनों मैं एजी कालोनी के रेसिडेंट कमिटी का अध्यक्ष था। उस दिन मुझे अमृत, गौरव तथा शुभंकर ने फोन करके बुलाया और चिल्ड्रन पार्क के पेड़ों के काटे जाने की सूचना दी और अपनी आपत्ति दर्ज की, कि जिन पेड़ो से कोई नुकसान नहीं है उन्हें न काटा जाये। मैनें पेड़ों के काटने को रुकवा दिया। अमृत और उसके दोस्त काफी खुश थे। अमृत से बात करके पता चला कि वह एक जागरुक प्रकृति प्रेमी था। अमृत तो हमारे बीच नहीं रहा पर एक संदेश जाते-जाते दे गया कि मृत्यु कब आ जाए पता नहीं। इसलिए हमें हरपल को आनंद पूर्वक जीना चाहिए। उसके व्यक्तित्व की एक सबसे बड़ी खाशियत यह थी वह हमेशा हंसी मजाक के मूड में रहता था। उसकी असमय मृत्यु ने परिचित लोगों को स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने के लिए बाध्य कर दिया। आज शहरी जीवन शैली में स्वास्थ्य, शरीर व मन एक बड़ी चुनौती है, खासकर ऑफिस में काम करने वाले लोगो के लिए। स्वस्थ शरीर ही सभी सुखों का आधार है। इसका हमें विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस मानव देह की नश्वरता का अक्सर खयाल रहे तो दुनिया से अधिकांश अनियमितता खत्म हो जायेगी, झगड़े कम हो जाएंगे। क्योंकि जब कोई बेईमानी, धोखाधड़ी, व्याभिचार, चोरी या अन्य अनैतिक कार्य करता है तो उसे लगता है कि वह कभी मरेगा ही नहीं। बिहार में प्रसिध्द एक लोकगीत की कुछ पंक्तियां बिल्कुल सटीक बैठती है जो इस प्रकार है- लोगवा काहे खातिर चोर, डाकू, बेईमान बनलबा इ देहिया चार दिन के मेहमान बनलबा। एकरा जाइ खातिर बांस के विमान बनलबा। अर्थात न जाने क्यों लोग चोर, डाकू बेईमान बनते है जब कि यह शरीर नश्वर है और अंत में इस बांस की अर्थी पर ही श्मशान जाना है।

स्वस्थ सा दिखने वाला व हमेशा खुशमिजाज रहने वाला अमृत की मृत्यु ने हमें यही सबक दिया है कि हम भी अमर नहीं है। तो हमें चाहिए कि हम शाश्वत नियम का यथासंभव पालन करें। खुश रहे और खुशियां बांटे।

मृत्यु पर मेरी एक रचना मुझे याद आती है जो इस प्रकार है: मृत्यु के बाद आदमी कहां जाता ही होगा? सब कहते है, श्मशान या कब्रिस्तान, जलता या दफन हो जाता होगा। पर आत्मा का क्या? क्या इसी जहां के जैसा कोई दूसरा जहां होता होगा? क्या अमीरी-गरीबी, उंच-नीच, जाति-पाति के काले बादल वहां भी लोगों के मन को धुंधलाता होगा ? क्या इसी जहां की तरह ही काम क्रोध, लोभ, मोह लोगो को सताता होगा?

स्वर्ग-नरक इसी दुनिया में है या कहीं और होता होगा? क्या सबके मन में ऐसे विचारों का आना जाना होता होगा? जब मृत्यु की कोई दवा नहीं तो प्यार से जीने में किसी को क्या हर्ज होता होगा?

आदत

श्री यशवंत वर्मा
वरिष्ठ अनुवादक

आदत हमारे व्यवहार का एक हिस्सा है आदत हमारे व्यवहार की एक ऐसी श्रृंखला है जो अपने आप होती हैं या हमारे पूर्व के संस्कारों द्वारा निर्धारित होती हैं। आदत हमारी सफलता या असफलता के लिए प्रमुख जिम्मेदारी निभाता है या यूं कहें कि आज हम अपनी आदतों की वजह से यहां पर हैं तो गलत नहीं होगा। सबसे पहले हमें अपनी आदतों के प्रति सजग रहना होगा हम जो भी करते हैं एक बार सोचना होगा कि भविष्य में इसके परिणाम कैसे होंगे आदतें दो प्रकार की होती हैं अच्छी एवं बुरी। अच्छी आदतें वह है जिससे करना शुरुआत में भले अच्छा नहीं लगता हो परंतु लंबी अवधि तक करते रहने से अच्छे परिणाम मिलते हैं जैसे व्यायाम करना, पढ़ना, ध्यान करना आदि। बुरी आदतें को करने में पहले आनंद या सुख मिलता है, लेकिन बाद में उसके परिणाम दुखद होते हैं जैसे स्मोकिंग, ड्रिंकिंग, चेविंग, झूठ बोलना, काम टालना आदि। आदत तो हम बनाते हैं लेकिन आगे चलकर आदतें हमें नियंत्रित करती हैं। शुरुआत में किसी भी आदत को बनाने में दिक्कत होती है क्योंकि हमारा अवचेतन मन स्वीकार नहीं करता है लेकिन बार-बार संदेश देने पर अवचेतन मन स्वीकार कर उसे स्वभाव में रूपांतरित कर देता है। अब हमारा मन तो जानता है कि ज्यादा मोबाइल देखना आंखों के लिए नुकसान हैं पर अवचेतन मन हाथ को आदेश देकर पास में रखें मोबाइल को बार-बार पकड़ता है।

कोई भी आदत जिसको ना करने से बेचैनी या असहज महसूस होती है तो आप आदत के गुलाम बन गए। आप स्वयं पर नियंत्रण खो देते हैं और प्रतिक्रिया में उलझ के रह जाते हैं एक धुमपान करने वाला हो या माला जपने वाला, दोनों यदि एक दिन ऐसा ना करें तो बेचैन हो जाते हैं इसका मतलब दोनों आदत एक है। करने से लाभ मिलता है तो नहीं करने से नुकसान बहुत है। हमें अपने माल्कियत को जिंदा रखने के लिए आदत के बस में आने से बचना होगा प्रतिक्रिया बंधन में बनती है जबकि क्रिया मुक्त करती हैं। आदत हमें प्रतिक्रिया में उलझा कर रखती है।

आदत को नियंत्रित किया जा सकता है। सर्वप्रथम अपनी अच्छी और बुरी आदतों की सूची बनाइए। पहले आप ऐसे कामों को दो भागों में बांट लिजिए जो आप चेतनमन से और अवचेतन मन से करते है। पाएंगे कि हमारे दैनिक चर्चा के अधिकांश कार्य अपने आप हो रहा है – सोकर उठना और बाथरुम में जाकर मूंह धोना, चाय पीना, व्यायाम करना, नहाना, नास्ता करना इत्यादि। हर काम को अनुभव करते हुए चेतन मन से काम करें। धीरे-धीरे आप पाएंगे कि हर काम के आप प्रति सजग हो जायेंगे। जो आदत आपको नुकसान पहुंचाएंगे ऐसे आदतों को धीरे-धीरे दैनिक दिनचर्या से छोड़ने का प्रयास करते रहे शुरु में तो दिक्कत महसुश होगा लेकिन आगे चलकर वे हमारे लिए लाभदायक सिध्द हो सकते है।

एक व्यक्ति समुद्र किनारे इकट्ठे हुए पत्थर को उठा उठा कर समुद्र में फेंके जा रहा था। लेकिन अचानक उसके हाथ में एक बड़ा मोती हाथ लगा लेकिन आदत से लाचार उस व्यक्ति ने उसे भी समुद्र में फेंक दिया। यह उदाहरण दर्शाता है कि बुरी आदत के चक्कर में अच्छे अवसर भी हाथ से निकल जाते है।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, सूरत

श्री मंजेश परासर
हिंदी अधिकारी

दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 को सूरत, गुजरात में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के तत्वाधान में पूरे देश के केंद्रीय कार्यालय, मंत्रालय, विभाग, उपक्रम आदि का संयुक्त हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। दिनांक 14 सितंबर को माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री की अध्यक्षता में हिंदी दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें गृह राज्य मंत्री सहित कई गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। समारोह के दौरान माननीय गृह-मंत्री जी ने कंठस्थ टूल 2.0, तथा हिंदी से हिंदी बृहत शब्दकोश का लोकार्पण किया। यह शब्दकोश पूर्णतया डिजीटल एवं सर्वसुलभ है। माननीय गृहमंत्री जी ने हिंदी के विकास हेतु क्षेत्रीय भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों को हिंदी में स्वीकार्य बनाने पर बल दिया। साथ ही, उन्होंने अपनी मातृभाषा से प्रेम एवं इसके अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया। गृहमंत्री जी ने कहा कि अंग्रेजी भाषा मैकाले द्वारा लंबे समय तक शासन करने तथा भारत की सभ्यता एवं संस्कृति को नष्ट करने के लिए लाया गया था। देश की सभी भाषाएं हिंदी की भगिनी हैं तथा सभी भाषाओं के विकास से ही हिंदी भाषा सुदृढ़ एवं समृद्ध होगी। उन्होंने यह भी कहा कि शीघ्र ही तकनीकी विषयों जैसे-चिकित्सा, इंजीनियरिंग सहित सभी विषयों में हिंदी में पढ़ाई पूरे देश विभिन्न शिक्षण संस्थानों में प्रारंभ की जाएगी। इसके लिए सभी विषयों का हिंदी भाषा में अनुवाद कार्य पूर्ण हो गया है। इस दौरान अन्य गणमान्य व्यक्तियों जैसे-गृह राज्य मंत्री एवं गुजरात के मुख्यमंत्री आदि ने भी हिंदी की स्वीकार्यता एवं इसके अधिक से अधिक बल दिया तथा उन्होंने देश की तरक्की एवं उन्नति में भी राजभाषा हिंदी की भूमिका पर विस्तारपूर्वक वक्तव्य दिया। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार माननीय प्रधानमंत्री विश्व पटल पर हिंदी में अपने वक्तव्य को रखते हैं जिससे हिंदी विश्व में अपनी पहचान और स्थान सुनिश्चित कर रही है।

माननीय गृहमंत्री जी के अभिभाषण के साथ ही उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ जिसके पश्चात राजभाषा हिंदी से संबंधित विभिन्न विषयों जैसे-

1. विगत 75 वर्षों में राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा।
2. युवाओं को गर्व का अनुभव कराती हिंदी।
3. महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल का योगदान।
4. भाषाई समन्वय का आधार है हिंदी। तथा
5. भारतीय सिनेमा और हिंदी।

उपरोक्त सभी सत्रों में कई गण मान्य वक्ता के रूप में मौजूद थे जिन्होंने अलग-अलग मुद्दों पर अपनी बात रखी तथा उपस्थित सभी हिंदी कर्मियों का ज्ञानवर्धन किया।

प्रथम सत्र में राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश ने बताया कि किस प्रकार आजादी की लड़ाई में हिंदी ने लोगों

को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और किस प्रकार महात्मा गाँधी एवं अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने लोगों से संवाद करने हेतु लोकप्रिय भाषा हिंदी को चुना। अपनी भाषा होने के कारण हिंदी ने लोगों तक भावनात्मक रूप से संवाद का संप्रेषण किया। इसी सत्र के दौरान संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कर्मियों के योगदान की चर्चा करते हुए राजभाषा संवर्ग एवं हिंदी अधिकारियों की दयनीय स्थिति पर चिंता व्यक्त की तथा उन्होंने बताया कि राजभाषा कर्मी कार्यालय में हिंदी के प्रयोग हेतु किस तरह प्रयास कर रहे हैं एवं सभी को प्रोत्साहित कर रहे हैं। तृतीय वक्ता के रूप में संसदीय राजभाषा समिति के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ सत्य नारायण जटिया ने भी हिंदी को राजभाषा चुने जाने के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संविधान में अंग्रेजी का प्रावधान हमारी गुलाम मानसिकता को दर्शाता है। इस मानसिकता ने हमारी सोच एवं मातृभाषा दोनों को पंगु कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी हमारी मौलिक सोच है जिसका स्थान विश्व की कोई भाषा नहीं ले सकती। हिंदी में सभी भारतीय भाषाओं का समावेश है।

द्वितीय सत्र के प्रथम वक्ता केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड(सी.बी.एफ.सी.), मुंबई के अध्यक्ष श्री प्रसून जोशी ने बताया कि किस प्रकार अंग्रेजी के गैर जरूरी प्रयोग ने हमारी भाषा को क्षति पहुँचाया है। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी भाषा ही नहीं, हमारी भावना है जो समावेशी है और सभी भाषाओं को साथ लेकर चलती है। कई बार हिंदी के साथ अन्य भाषा के शब्दों के आवश्यक प्रयोग को भी उन्होंने बताया तथा उन्होंने यह भी कहा कि जीविकोपार्जन की भाषा होने के कारण अंग्रेजी हमारा कौशल हो सकती है परंतु हमारी भाषा हिंदी का स्थान नहीं ले सकती। इसीलिए हमें अंग्रेजी के गैर जरूरी प्रयोग से बचना चाहिए तथा अपनी भाषा पर सदैव गौरवान्वित होना चाहिए। इसी सत्र में द्वितीय वक्ता के रूप में उपस्थित भारतीय प्रशासनिक सेवा के श्री गंगा सिंह ने भी हिंदी भाषा के महत्व को समझाते हुए बताया कि मातृ भाषा हिंदी पूरे देश को जोड़ने के साथ-साथ अपनेपन का बोध भी कराती है। तृतीय वक्ता श्री निशांत जैन भारतीय प्रशासनिक सेवा से ही थे जिन्होंने बताया कि राष्ट्र की भाषा के रूप में हिंदी न केवल हमारी सोच बल्कि व्यक्तित्व को भी समुन्नत करती है। साथ ही उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय हिंदी को ही दिया तथा बताया कि देश के समग्र विकास के लिए अपनी सभी भाषाओं का विकास अति आवश्यक है। इस सत्र के अंतिम वक्ता अभिनेता पंकज त्रिपाठी ने अभिनय के क्षेत्र में अपनी सफलता का श्रेय हिंदी को देते हुए बताया कि आजकल के कलाकार अंग्रेजी में सोचते हैं और हिंदी में बोलते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि उनके संवाद उतने भावपूर्ण तरीके से लोगों के दिलों तक नहीं पहुँच पाती हैं। चूकि वे एक गांव से आते हैं उनकी मौलिक भाषा और सोच दोनों के हिंदी होने के कारण ही उनके भाव और संवाद एकीकृत होकर लोगों के दिलों तक पहुँचती है जिसके कारण ही लोगों का प्यार उन्हें और उनके अभिनय को मिलता है।

तृतीय सत्र की शुरूआत लोकसभा सांसद प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी के वक्तव्य से हुआ जिसमें उन्होंने बताया कि किस प्रकार लोगों के दिलों तक पहुँचने एवं आजादी के आंदोलन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए गाँधी जी ने हिंदी को माध्यम के रूप में चुना और उनका यह प्रयास सफल भी हुआ। गैर हिंदी भाषी होने के बावजूद महात्मा गाँधी एवं सरदार पटेल दोनों ने हिंदी काबिलीयत को पहचाना और अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध हिंदी में अपनी बातों को रखने पर जोर दिया तथा हिंदी का प्रयोग हथियार की तरह करते रहे। उन्होंने अपने संबोधन में गाँधी जी के वक्तव्य को दोहराते हुए कहा कि अंग्रेजीं से पूर्ण रूप से निजात पाने के लिए हमें व्यापक स्तर पर आंदोलन करना पड़ेगा। उन्होंने राजभाषा द्वारा निर्दिष्ट राजभाषा के मानकों के अनिवार्य अनुपालन पर जोर दिया तथा बताया कि संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण में यह पाया गया है कि कोई भी कार्यालय राजभाषा के मानदंडों पर खरा नहीं उतरता है। उन्होंने गाँधी जी के निम्न वक्तव्यों को भी दोहराया:-

हिंदी मेरे लिए स्वराज का प्रश्न है। मातृभाषा का उपयोग देश में शैक्षणिक एवं व्यवहारिक दोनों स्तर पर होना चाहिए। उन्होंने सरदार पटेल के योगदान को याद किया कि कैसे सरदार पटेल ने भाषायी संस्कृति को जोड़ते हुए अखंड भारत का निर्माण किया।

इस सत्र के द्वितीय वक्ता प्रो. राम मोहन पाठक ने कहा कि भाषा भावनाओं से कहीं अधिक व्यवहार का विषय है। अंग्रेजी ने हमारी संस्कृति को बर्बाद तथा हमारी भाषा को परिष्कृत किया है। गाँधी जी और सरदार पटेल दोनों ने हमारी भाषा को व्यवहारिकता में लाने हेतु बहुत प्रयास किया। एक अन्य वक्ता गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति ने कहा कि गाँधी जी ने अपने आंदोलन की शुरूआत गुजरात से की जो एक हिंदीतर भाषी क्षेत्र है। फिर भी उन्होंने हिंदी के महत्व को समझते हुए अधिक से अधिक लोगों तक अपने संदेश एवं भावनाएं पहुँचाने के लिए जन-मानस की भाषा हिंदी को चुना। इस सत्र के अंतिम वक्ता रहे उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष हृदय नारायण दीक्षित ने कटाक्ष किया कि राजनेताओं के मोह रूपी अपराध के कारण आज तक अंग्रेजी का अंत नहीं हो पाया जिसे भारत की सभ्यता, संस्कृति को नष्ट करने के उद्देश्य ही हमारे देश में लाया गया था। मैकाले ने कहा था कि अगर हमें भारत में लंबे समय तक राज करना है तो यहां की सभ्यता, संस्कृति तथा यहां की भाषा जो सभ्यता एवं संस्कृति का मूल है को सबसे पहले नष्ट करना आवश्यक है।

चतुर्थ सत्र का शुभारंभ वरिष्ठ पत्रकार श्री आलोक मेहता ने किया। उन्होंने बताया कि हमें अपनी भाषा का लुत्फ उठाना चाहिए तथा भारतीय भाषाओं के बीच समन्वय स्थापित करना चाहिए। भाषा हमें जोड़ती है, तोड़ती नहीं। भाषा एक बहती नदी है जो यदि रुक गई तो विलुप्त हो जाएगी। उन्होंने वैश्विक स्तर अपनी भाषा को समृद्ध करने हेतु विभिन्न देशों के महत्वपूर्ण ग्रंथों, साहित्यों हिंदी में अनुदित कराने पर जोड़ दिया तथा कहा कि भाषा को हम जितना व्यवहार में लाएंगे उतना ही भाषा समृद्ध होगी। द्वितीय वक्ता के रूप में श्री चामू कृष्ण शास्त्री जी ने स्रोताओं का ज्ञानवर्धन किया तथा उन्होंने बताया कि कैसे विभिन्न भाषाओं में एक ही भाव को अलग-अलग शब्दों के जरिए संप्रेषित किया जाता है। उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं के विकास होने पर ही भारत का विकास होगा तथा हमारी सभ्यता, संस्कृति सुदृढ़ होगी। सभी भाषाएं एक-दूसरे की सहायक नदियों की तरह हैं जिनके बीच समन्वय स्थापित होने से अभिव्यक्ति सदैव प्रभावी एवं भावपूर्ण होगी। इसलिए भारत के हृदय कमल के विकास के लिए हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के बीच समन्वय एवं इनका विकास अति आवश्यक है। भाषा जीवन है, दर्शन है तथा सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास है। उन्होंने कहा भारतीय साहित्य अलगाववाद का विषय नहीं है क्योंकि यहां व्यवस्थाएँ अनेक हैं परंतु हेतु एक है, पंथ अनेक हैं पर गंतव्य एक, भाषाएं अनेक हैं पर भाव एक। उन्होंने कहा कि भारत को समझने के लिए आवश्यक है कि भारतीय भाषाओं को समझा जाए। किसी भी भाषा के विकास के लिए उन्होंने निम्न सात महत्वपूर्ण आवश्यकताओं को दर्शाया:-

1. बोलना
2. माध्यम- शिक्षा, प्रशासन, मनोरंजन, न्याय, वाणिज्य, संचार एवं सूचना
3. सम्यक साहित्य
4. समकालिक शब्द भंडार
5. तकनीक
6. पठन-पाठन सामग्री
7. आश्रय

उनके अनुसार उपर्युक्त बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही किसी भाषा के विकास हेतु कार्य योजना तैयार की जानी

चाहिए। उन्होंने कहा कि हिंदी रूपी गंगा को धरती पर लाने के लिए हजारों भगीरथ के तप की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान वास्तविक रूप में भारतीय भाषाओं में है जिसके उत्थान से भारतीय संस्कार का पुनरूत्थान होगा, भारतीयता का उत्थान होगा और भारत विश्व गुरु बनेगा। अंत में उन्होंने कहा कि भारतीय शब्द भंडार भारतीय संस्कार एवं परम्पराओं का भंडार है। इसके पश्चात राज्य सभा सांसद संगीता यादव ने अपने विचार रखते हुए कहा कि अंग्रेजी हमारी सांस्कृतिक दासता का प्रतीक है जिसे हमपर थोपा गया था। इससे मुक्ति पाने हेतु हिंदी का विकास आवश्यक है क्योंकि हिंदी हमारे दिल की भाषा है। हिंदी के विकास के लिए क्षेत्रीय भाषाओं को सहेजने एवं इनका विकास करने की आवश्यकता है। सत्र के अंत में लोकसभा सांसद पूनम बेन हेमंत भाई ने बताया कि हिंदी के कारण ही उनका राजनैतिक जीवन सफल हो पाया है। यह हिंदी की ही सरलता है जो पूरे देश को जोड़ती है तथा इसमें भारत के सभी भाषाओं का समागम है। हिंदी भारतीयता की धरोहर है जिसका विकास होना ही चाहिए।

चतुर्थ सत्र में भारतीय सिनेमा के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रसार एवं प्रभाव पर विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने अपने वक्तव्य रखे। इस सत्र की शुरूआत भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक श्री संजय द्विवेदी ने संवाद एवं जन संचार में हिंदी भाषा के योगदान पर अपना पक्ष रखा और कहा कि हम माने या ना माने राष्ट्र की भाषा के रूप में हिंदी ने अपनी पहचान स्थापित किया है। द्वितीय वक्ता सूरत के आयुक्त श्री ए.के.तोमर ने अपने संबोधन में हिंदी के विकास तथा हिंदी में सभी भाषाओं जैसे-उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत एवं देश की अन्य सभी भाषाओं के समावेश को वर्णित किया और बताया कि विश्व की कोई भी भाषा उतनी भावपूर्ण एवं प्रभावी नहीं है जितनी की हिंदी। उन्होंने हिंदी साहित्य के कई उदाहरणों के माध्यम से बताया कि हमारी हिंदी भाषा कितनी उन्नत तथा प्रभावी है। तृतीय वक्ता फिल्म निर्माता एवं निर्देशक श्री महेश मांजरेकर ने बताया कि फिल्में समाज को ही दर्शाती हैं तथा समाज से प्रभावित होकर ही फिल्मों का चित्रण किया जाता है। उन्होंने भी मातृभाषा को दिल से अपनाने तथा उसके अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया तथा हिंदी भाषा की मौलिक सोच आधारित संवादों के अधिक प्रभाव का समर्थन किया। इसी प्रकार फिल्म निर्माता एवं निर्देशक श्री चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने भी बताया कि भाषा बहती नदी की तरह क्षेत्र एवं जगह के अनुसार स्वरूप बदलती है और लोगों के दिलों तक पहुँचती है इसलिए हमें सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। भाषा कभी तोड़ती नहीं बल्कि बिना किसी भेदभाव के अभिव्यक्तियों को संप्रेषित करती है। इसलिए बिना सभी भारतीय भाषाओं के विकास के हिंदी का विकास संभव नहीं है।

सभी सत्रों के माध्यम से गणमान्य वक्ताओं ने श्रोताओं का ज्ञानवर्धन किया तथा हिंदी भाषा के महत्व तथा उसको व्यवहार में लाने पर बल दिया। गृहमंत्री सहित सभी वक्ताओं ने हिंदी के वैश्विक पटल पर तीव्र विकास करने तथा सशक्त पहचान बनाने वाली भाषा बताया तथा यह भी बताया कि अंग्रेजी भाषा हमारी सांस्कृतिक दासता का प्रतीक है क्योंकि मैकाले ने लंबे समय तक देश पर राज करने हेतु तथा हमारी सभ्यता संस्कृति को नष्ट करने के उद्देश्य से ही भारत में अंग्रेजी की शुरूआत की थी। परंतु रोजगार की भाषा होने के कारण यह हमारी कौशल है। जबकि हिंदी भाषा हमारी मूल है, सभ्यता है, संस्कृति है, पहचान है, भावपूर्ण अभिव्यक्ति है फिर भी हिंदी को व्यवहार में लाने में हमें संकोच क्यों है? यह एक यक्ष प्रश्न है। हम सभी समझते हैं कि राष्ट्र के रूप में हिंदी हमारी पहचान है तथा देश की सभी भाषाएं इसकी सहेलियां हैं जिनका हिंदी के विकास में भरपूर योगदान है फिर ये भाषायी असहजता क्यों? यह प्रश्न मेरे जेहन में बार-बार उठता है परंतु मैं निरूत्तर हूँ। क्या इसके लिए सिर्फ सरकार जिम्मेवार है?

चिंतन

श्री बिजय कुमार नाएक
वरिष्ठ लेखाकार

जीवन है चार दिनों का, इसे जीना सिख लो,
अच्छा करें अच्छा सोचें यही मन में ठान लो।
कभी रिश्ते जोड़कर कभी दिल तोड़कर,
फिर भी गम की खुशियों का दिल ढूंढते हैं।
बुराई मिट जाती है जब कभी अच्छे काम करते हैं,
चर्चा की जाती है उन लोगों की जब कभी किसी की शिकायत कर देते हैं।
ना कहते हैं कुछ ना करने देते हैं, केवल गुमराह करते हैं,
बढ़ते हुए कदमों के बजाए बोलना ही उन दरिंदों का काम है।
सच्चाई की राह में बेशक कष्ट उनको मिलती है,
पर काँटो के बीट देखो फूल हमेशा खिलते हैं।
घर ना किसी की बना सको तो झोपड़ियां न जला देना,
मरहम पट्टी कर ना सको तो घाव में नमक ना लगा देना।
जो काँटों को भी फूल कहे वह धोखे का सौदागर है,
अच्छे-बुरे का फर्क क्या जाने जो विष और अमृत का प्यासा है।
जब दिल की बात लब पर आती है वह रचना बन जाती है,
अच्छा सोचना, अच्छा कर दिखाना यही तो मनुष्य का चिंतन है।

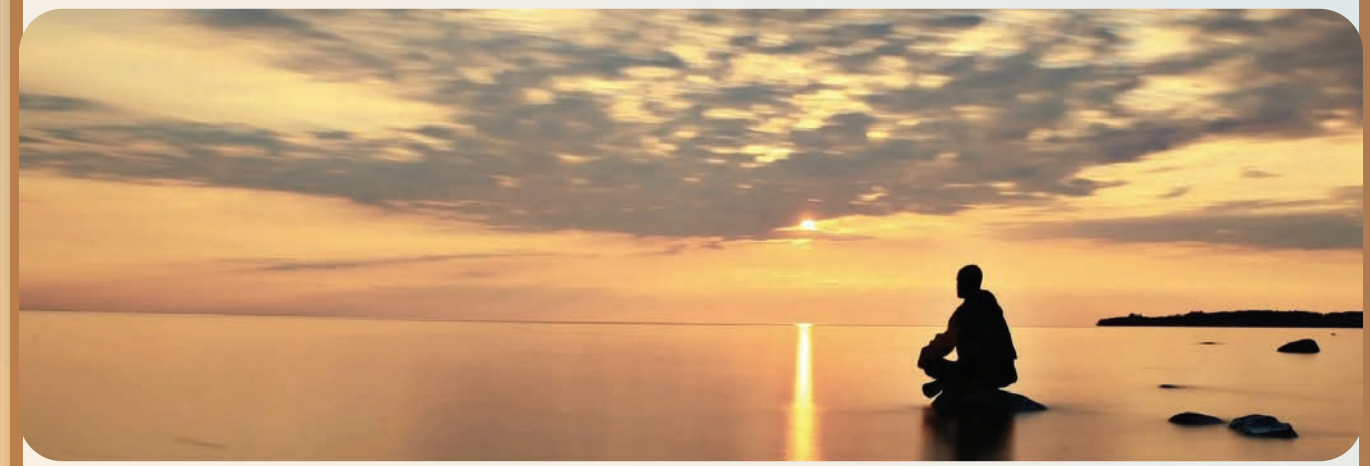

आज दुनिया को मानवता की जरूरत

श्री मुकेश कुमार
लेखाकार

मानवता का अर्थ इंसानियत, दया, मनुष्य जाति का स्वभाव, मानव जाति, मानव स्वभाव, भलामानस का गुण एवं मनुष्यत्व होता है। जब हम पशु-पक्षियों और दूसरे जीवों के प्रति दया का भाव दिखाते हैं तो उसे मानवता कहते हैं। ईश्वर ने मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। मनुष्य 86 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ जीव है। मनुष्य को ईश्वर ने बोलने की शक्ति दी है जिसके माध्यम से वह अपने भावों को व्यक्त कर सकता है। हम अपने सुख-दुख, खुशी-गम, आश्चर्य एवं सभी भावों को बोल कर प्रकट करते हैं। दोस्तों, अब सवाल यह उठता है कि आज दुनिया को मानवता की जरूरत क्या है? तो इसका बहुत ही सीधा जबाव है कि विश्व के अनेक भागों में आज कई तरह का संकट मौजूद है।

पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सउदी अरब जैसे मुस्लिम देशों में स्त्रियों की स्थिति जहाँ पुरूष उनका शोषण करते हैं। वहां स्त्रियां अपनी मर्जी से कोई काम नहीं कर सकती हैं। उन्हें घर के कामों के लिए ही समझा जाता है। उन्हें बाहर जाकर नौकरी करने की इजाजत नहीं। उनपर बंदिश लगाई जाती है। यह मानव अधिकारों का हनन है।

आज के समय में विस्तारवादी मानसिकता बहुत ही खतरनाक है। अपने देश का विस्तार करने के चक्कर में एक देश दूसरे देश से युद्ध का ऐलान कर देता है और युद्ध में कितने बच्चे तथा औरत असहाय हो जाते हैं। अपने विस्तारवादी विचार को पालने वाले देश न जाने दूसरे पर कितना जुल्म करते हैं। उनमें दया, इंसानियत नाम की चीज नहीं रहती। आज के समय में देखा जाए तो रूस-युक्रेन युद्ध से दोनों देशों को नुकसान हो रहा है। इसमें युक्रेन को बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचा है तथा रूस को भी काफी कुछ खोना पड़ा है। इसी युद्ध के कारण अमेरिका में आर्थिक मंदी आ गया है। हाल ही में समाचार के माध्यम से जानकारी दी गई है कि अमेरिका में 22 हजार कर्मचारियों को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इस युद्ध से पूरा विश्व प्रभावित है। युक्रेन में कितने बच्चे विकलांग हो गए, कितनों के भविष्य अंधकार में डूब गए हैं जिसे सुनकर बहुत दुख होता है। रूस की विस्तारवादी नीति की वजह से युक्रेन को भारी नुकसान झेलना पड़ रहा है। समूचे विश्व को इस विषय पर सोचने की आवश्यकता है अन्यथा विश्व आर्थिक मंदी की चपेट में आ सकता है।

स्वार्थ में आकर लोग बुरे से भी बुरा कार्य करने को तैयार हैं। मानव अंगों की तस्करी, बाल शोषण, यौन शोषण जैसी समस्याएं आज विश्व भर में देखने को मिलती हैं। समाज में दिन-प्रतिदिन अपराध, हत्या, लूटपाट की घटनाएं सुनने को मिलती हैं। विश्व में अपराध की बढ़ती दर से पता चलता है कि मानव ने मानवता खो दी है। जानवरों के प्रति भी क्रूरता दिखाई जा रही है। जानवरों को सिर्फ मनुष्य का भोजन समझा जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि हम मानवता कैसे दिखा सकते हैं? असहाय दिन दुखी लोगों की मदद करके मानवता दिखाई जा सकती है। यदि हम दूसरों की मदद करते हैं तो मानवता का धर्म निभाते हैं। भूखे को खाना खिलाकर, अंधे व्यक्ति को सड़क पार कराकर, सड़क पर दुर्घटना में घायल किसी व्यक्ति को अस्पताल पहुँचाकर भी मानवता दिखाई जा

सकती है। हमें यह याद रखना चाहिए कि मनुष्य का जन्म दूसरों की मदद करने के लिए ही हुआ है। हमें अपने अनमोल जीवन का पूरा सदुपयोग करना चाहिए।

समाज में प्रेम का संदेश देकर तथा नफरत भुलाकर एक-दूसरे से मिलना चाहिए। समाज के कई वर्ग में आज लोग परेशान हैं। वे पीड़ित हैं। उनके पास खाने को भोजन नहीं है। हमें उन जैसे लोगों की मदद करनी चाहिए। किसी से लड़ाई-झगड़ा, मारपीट नहीं करनी चाहिए। जाति-धर्म, लिंग-भाषा के आधार पर भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

कई बार गलतियों को क्षमा करके भी मानवता दिखाई जा सकती है। मनुष्य को अपने भीतर बदले की भावना को पनपने नहीं देना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति से कोई गलती हो जाती है तो हमें क्षमा कर देना चाहिए। मन में किसी भी तरह का शिकवा-शिकायत नहीं रखना चाहिए। दूसरों को माफ करने से हम और महान बन जाते हैं। माफ करने से मन में संतुष्टि का भाव पैदा होता है। हम सभी ने मदर टेरेसा के बारे में सुना है। प्रथम विश्व युद्ध में अनेक लोग मारे गए जिसे देखकर मदर टेरेसा के मन में बहुत पीड़ा उत्पन्न हुई। उन्होंने दीन-दुखियों की सेवा के लिए "मोडालिटी" नामक एक संस्था बनाई और सन्यासी बन लोगों की सेवा करने लगीं। मदर टेरेसा ने गरीब और असहाय लोगों की मदद करने के लिए कोलकाता में "मिशनरीज ऑफ चैरिटी" नामक एक संस्था का निर्माण किया। कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए वर्ष 1950 में उन्होंने शांति नगर की स्थापना की। भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री पुरस्कार प्रदान किया। 19 अक्तूबर, 2003 को मदर टेरेसा को संत की उपाधि दी गई। उन्होंने आजीवन असहाय, दीन-दुखी लोगों की सेवा की और मानवता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। हम सभी को मदर टेरेसा के जीवन से मानवता की शिक्षा लेनी चाहिए।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2022 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम

हिंदी निबंध लेखन (20.09.2022)		
1	स्थान	विजेता का नाम एवं पदनाम
हिंदी भाषी	प्रथम	सुश्री निवेदिता, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री संजीव दुबे, लेखाकार
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक
	द्वितीय	श्रीमती प्रभा कंगारी, वरि. लेखाकार
	तृतीय	श्री शुभेंदु रंजन नायक, सहायक लेखा अधिकारी
2	टिप्पणी एवं मसौदा लेखन (21.09.2022)	
हिंदी भाषी	प्रथम	सुश्री निवेदिता, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री रोहित कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्री मनोरंजन पाणिग्राही, वरि. लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री अशोक कुमार देहुरी, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्रीमती शांतिलता सेठी, पर्यवेक्षक
3	अनुवाद प्रतियोगिता (22.09.2022)	
हिंदी भाषी	प्रथम	श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री दिलीप कुमार दुबे, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्री प्रिय चंदन कुमार, सहायक लेखा अधिकारी
हिंदीतर भाषी	प्रथम	श्री मनोरंजन पाणिग्राही, वरि. लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री अशोक कुमार देहुरी, सहायक लेखा अधिकारी
	तृतीय	श्रीमती वीणापाणि महांति, पर्य़वेक्षक
4	राजभाषा प्रश्नोत्तरी (27.09.2022)	
संयुक्त	प्रथम	श्री दिलीप कुमार दुबे, सहायक लेखा अधिकारी
	द्वितीय	श्री शुभेंदु रंजन नायक, सहायक लेखा अधिकारी
		श्री रवि कुमार, लेखाकार
	तृतीय	श्री रोहित कुमार, सहायक लेखा अधिकारी

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

हिन्दी के प्रयोग बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव

- ☞ उपस्थिति पंजी में हस्ताक्षर एवं सहकर्मियों से वार्तालाप हिन्दी में करें।
- ☞ फाइलों पर विषय अनिवार्य रुप से हिन्दी या द्विभाषी में लिखें।
- ☞ कम्पयूटरों में यूनिकोड/देवनागरी लिपि का प्रयोग करें।
- ☞ धारा 3(3) से संबंधित कागजात हिन्दी/द्विभाषी में ही जारी करें।
- ☞ हिन्दी में प्राप्त पत्रों के जवाब अनिवार्यतः हिन्दी में देवें।
- ☞ सभी फाइल कवर, पत्र शीर्ष, नामपट्ट, साईनबोर्ड व रबर स्टाम्प द्विभाषी में उपयोग करें।
- ☞ मानक मसौदे एवं प्रपत्र केवल हिन्दी/द्विभाषी में प्रयोग करें।
- ☞ हिन्दी न जानने वालों को हिन्दी सीखने में सहयोग, प्रोत्साहन व मार्गदर्शन देवें।